।। ब्रम्ह ग्यानी को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ ब्रम्ह ग्यानी को अंग लिखंते ||

|| साखी ||

सिवरण री बेळा किसी || क्हा भागण को बार ||
जब चेते सुखराम के || तबही लेहे संभार ||१||

परीवार के सभी लोग अपने घर मे मस्त है और घर को एकाएकी भयंकर आग लग गयी है । आग के घेरे मे सभी लोगे पकडे गये है । ऐसे आग से बचना है तो बिना समय गमाते अपने घर से भागना चाहिये । भागने के लिये अभी मुहूर्त अच्छा है या बुरा है यह जानने मे भागने को विलंब नही करना चाहिये । विलंब किया तो मौत निश्चित है । इसीप्रकार काल जीव को ४३२०००० साल के ८४००००० योनी के दु:ख मे ढकेलने के लिये जब्बर तयारी से है और उसकी यह भयंकर तयारी जीव के समज मे आ गयी है । इसपर आदी सतगुर सुखरामजी महाराज हंस को कहते है कि ऐसी काल की कपट चाल समज मे आने पे हंस ने चेतने मे देर नही करनी चाहिये याने जो परमात्मा ऐसे जुलूमी कालसे मुक्त करा सकता है उसका स्मरण करने मे जरासा भी विलंब नही करना चाहिये ।।।१।।

करसी सोई भुक्त सी || प्राणी पून अर पाप ||
सुणज्यो सब सुखराम के || क्हा बेटो क्हा बाप ||२||

जैसे घर मे बाप,बेटा,माँ,बहन,पत्नी रहते थे । घर को भयंकर जानलेवा आग लग गयी । ऐसे आगमे से घरके कुछ सदस्य भाग निकले और कुछ भागने के लिये समर्थ होते हुये भी घर के वस्तू से मोह होने के कारण भागना नही चाहे इसका परीणाम यह हुवा की जो भागा वह आग के लपेट से बच गया और जो भागा नही वह आग मे खाक हो गया। जैसे पिता भागा तो पिता बच गया और पुत्र भागा तो पुत्र बच गया परंतु जो भागा नही वह पिता हो या पुत्र हो आग ने उसकी राख कर दी । इसीप्रकार जो पिता या पुत्र पुन्य याने सतस्वरुप के भक्ति मे विलंब न करते लग गये वे काल से बच गये और महासुख मे चले गया और जो पिता या पुत्र पाप याने गर्भ मे डालनेवाले माया के सुखो मे रमे रहे वे काल के ८४००००० योनी के ४३२०००० साल के चक्कर मे अटके रहे और जनम मरन का महादु:ख भोगते रहे ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी जीव प्राणीयो को समजा रहे है ।।।२।।

जिण की म्हेमा जुग मे || तांरी उतरी होय ||
ईत ऊत मे सुखराम के || फेर फार नही कोय ||३||

जैसे जो सदस्य खुंखार आगसे बचकर निकलकर आया उसकी जगतमे मनुष्य चतुर है, होशियार है,मौत ने घेरनेके बाद भी निकल गया ऐसी जहाँ वहाँ महिमा कर रहे और जो आग लगने पे भी घरको ही पकड बैठा और आगसे राख हो गये । उसकी जगतके मनुष्य मुर्ख है,भोला है,आगमे मौत आयेगी यह समजनेके बादमे भी निकले नही ऐसी अपकिर्ती

कर रहे है । इसीप्रकार जो सतस्वरप की भक्ति करके काल के परे याने अमरलोक जाता है उसकी तीन लोक चौदह भवन तथा अमरलोकके सभी लोक महीमा करते है और जो प्राणी मनुष्य देह मिलने पे भी सतस्वरप त्यागकर माया मे ही भिने रहता है,काल के परे नही निकलता है यम के दरबार बांधे जाता है और ८४००००० प्रकार के गर्भ मे बारबार पड्ता है,हर योनीमे बेहाल दु:ख भोगता रहता है ऐसे प्राणी की तीन लोक चौदह भवन तथा अमरलोकमे सभी अपकिर्ती करते है । इसप्रकारके किर्ती और अपकिर्ती मे जरासा भी फेरफार नही होता है । ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हज्ञानी तथा सभी प्राणी मात्र को समजा रहे है ।।।३।।

अेक कहुँ तोई झूट हे ।। दो भी कहया न जाय ।।
ग्यानी सो सुखराम के ।। स्मज लेवो मन माँय ।।४।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज ज्ञानीयोको कहते है कि,एक ब्रम्ह कहूँ तो झूठ है मतलब एक ब्रम्ह कहना यह सही नही है और माया और ब्रम्ह ऐसे कहूँ तो ब्रम्ह और माया ऐसे दो कहना यह भी झूठ है । ब्रम्ह एक कैसे है और ब्रम्ह और माया यह दो कैसे है यह ब्रम्हज्ञान आने पे याने सतविज्ञान ज्ञान आने पे विज्ञान ज्ञान के अनुभव से सहज समजता है परंतु विज्ञान प्रगट नही होता जबतक ज्ञान से ही मनमे समज लेना पड्ता ।।।४।।

निरवृत्त मे ब्रम्ह एक हे ।। प्रवत मे सुण दोय ।।
सत्त जाण्यो सुखराम के ।। जिण घाटे ज्यूं होय ।।५।।

प्राणीके घटमे कुद्रत विज्ञान वैराग्य प्रगट होनेके पहले याने प्रवृत्त स्थितीमे याने माया स्थितीमे प्राणीको माया सत लगती है और साथ मे ब्रम्ह(सतस्वरुप ब्रम्ह)भी सत लगता है ऐसे माया और ब्रम्ह(सतस्वरुप ब्रम्ह)दोनो भी सत लगते है परंतु निवृत्त याने मायाके परे कुद्रत विज्ञान वैराग्य प्रगट होनेपे माया सरासर असत है और काल का चारा है । सदा सुख देनेवाली नही है ऐसे सदा सुख न देनेवाली झूठ दिखती है और ब्रम्ह(सतस्वरुप ब्रम्ह)यह अमर है,कभी भी दु:ख न देनेवाला है ऐसा सत्य है ऐसा दिखता है । इसप्रकार आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जो प्राणी माया मे है उसे माया सत लगती है इसलिये माया के ज्ञानी माया व ब्रम्ह दो है ऐसा भासता है । और जो प्राणी ब्रम्ह(सतस्वरुप ब्रम्ह)बन गये है उसे माया झुठी दिखती है और सिर्फ ब्रम्ह ही(सतस्वरुप ब्रम्ह)सत्य है यह दिखता है ।।।५।।

अनेका मे अेक हे ।। अेके माहे अनेक ।।
ब्रम्ह चीन्या सुखराम के ।। ज्यां सब घट मे देख ।।६।।

अनेका मे एक है याने(होनकाल)पारब्रम्ह त्रिगुणी माया,सभी प्राणी तथा तीन लोक चौदह

भवन मे एकमात्र ब्रम्ह(सतस्वरुप ब्रम्ह)ही है और ये सभी याने(होनकाळ),त्रिगुणी माया, ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,सभी प्राणी तथा तीन लोक चौदह भवन उस एक ब्रम्ह (सतस्वरुप ब्रम्ह)मे ही है । ऐसा प्राणी को(सतस्वरुप ब्रम्ह)ब्रम्ह खोजने पे याने प्रगट करने पे अपने घट मे ही दिखता है । ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।६।।

तीन लोक चवदा भवण || सप्त दीप नर लोय ||
सब ही सुखराम के || अेक घट मध होय ||७||

तीन लोक(स्वर्ग,मृत्यु,पाताळ)चौदह भुवन(भुर,भुवर,स्वर,महर,जन,तप,सत,तल,अतल, वितल,सुतल,तलातल,रसातल,महातल,पाताल),सातद्विप(जंबु,पुलस्त,शालमली,कुस,क्रौंच ,शाक,पुष्कर)ये सभी एक घट मे ही है। ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ब्रम्हज्ञानीयो को कह रहे है । ।।७।।

बाहेर नर केबत करे || म्रजादा सब खोय ||
ज्यारे सूण सुखराम के || कुछ अबलखा होय ||८||

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जो मनुष्य स्वयम्को ब्रम्हज्ञानी समजता है और वह ब्रम्हज्ञानी ब्रम्ह को मूर्ती,देऊळ,काशी,सप्तपुरी,चारधाम,अडसट तिर्थ,मक्का मदीना मे देखने को कहता है ऐसे मनुष्य ने याने ब्रम्हज्ञानीने ब्रम्ह की मर्यादा तोड दी है । ऐसे मनुष्य की माया की अभिलाषा याने माया के सुखो की चाहना है ऐसे जानो ।।।८।।

ब्रम्ह ग्यान जब ऊपना || तब सारा घट माय ||
न्यारो कुण सुखराम के || तिण संग जीम ना जाय ||९||

ब्रम्हज्ञान(पारब्रम्ह)जब प्रगटता है तब सारे घट ब्रम्हमे दिखते है और सभी घटो मे (पारब्रम्ह)ब्रम्ह दिखता है,ब्रम्ह से न्यारी ऐसी पापरुपी और पुण्यरुपी माया यह दिखती नही और तुम अन्य मनुष्यके संग उन्हे ब्रम्हसे न्यारा है,पापी है यह समजके भोजन नही करते और स्वयम्को ब्रम्हज्ञानी(होनकाल पारब्रम्ह)कहते तो तुम्हारा यह ब्रम्हज्ञान ब्रम्हज्ञान कैसे है?यह तो पाप-पुण्यसे भरा हुवा धर्मज्ञान है । यह ब्रम्हज्ञान नही है ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज स्वयम् कथीत ब्रम्हज्ञानी को कहते है ।।।९।।

चौपाई ||

ध्रम ग्यान कन ब्रम्ह ग्यान हे || सो तेरा कहे मोई ||
के सुखराम समझ कर बोले || मे बुजत हूं तोई ||१०||

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज ने तथाकथीत ज्ञानी मनुष्यको पुछा की तेरा धर्मज्ञान है या ब्रम्हज्ञान है मुझे ज्ञान से समजाकर बता ।।।१०।।

ब्रम्ह ग्यान हे सुणो हमारे || ध्रम ग्यान नही राखूँ ||
के सुखराम सुणो सब कोई || सत बेण अे भाखूँ ||११||

ब्रम्हज्ञानी जबाब न देते अपने झूठे ज्ञानको बंद रखते हुये आपका क्या ब्रम्हज्ञान है सो

बतावो ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजसे पुछ्ता है तब आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजने उस मनुष्य को अपना ब्रम्हज्ञान सुनाते हुये कहाँ कि मै तेरे समान पाप-पुण्यसे भरा हुवा धर्मज्ञान नही रखता । मुझे सबमे ब्रम्ह दिखता है और मुझे सभी ब्रम्हमे दिखते है और मुझे कोई ब्रम्हसे न्यारे ऐसी उंच-निच माया नही दिखती। इसप्रकार मुझे जो दिखता है वह तुझे सत्य-सत्य बताया हूँ इसमे झूठा जरासा भी नही है मतलब जो सत्य दिखा है वही बचन तुझे सुनाये । ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजने स्वयम् कथीत ब्रम्हज्ञानी को बताया ।।११।।

ब्रम्ह ग्यान के गुरू न चेला ।। पाप पुन्न कुछ नाही ।।
के सुखराम आप मे सब हे ।। आप सकळ के माही ।।१२।।

मेरे ब्रम्हज्ञान मे(पारब्रम्ह)गुरु कौन तथा शिष्य कौन यह अलग-अलग नही दिखता। मुझे पाप और पुण्य ऐसे माया के ज्ञानीयो समान दो भाव नही रहते। मुझे गुरुमे भी ब्रम्ह दिखता और शिष्यमे भी ब्रम्ह दिखता,पापमे भी ब्रम्ह दिखता और पुण्यमे भी ब्रम्ह दिखता । इसप्रकार सभीमे एकमात्र ब्रम्ह दिखता और सभी उस एकमात्र ब्रम्हमे दिखते । ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजने स्वयम् कथीत ब्रम्हज्ञानी मनुष्य को कहा ।।।१२।।

ध्रम ग्यान मेरा सुण सत्त हे ।। सुभ बात सुभ खाणा ।।
के सुखराम निच की संगत ।। ऊंच कदे नही जाणा ।।१३।।

धर्मज्ञान मेरे पास है। मेरा धर्मज्ञान सत्त है। मेरे धर्मज्ञान मे शुभ-शुभ करना मतलब केवली संतोकी सेवा करना,कैवल्य सतसंग करना,दु:खीत,पिडीत,कष्टीक जीवोको कालके कष्ट से निकालना,सात्विक भोजन करना ऐसी बाते है। पशुपंछीयो पे दया करना,उन्हे मारके उनका भोजन नही करना,जो लोक निच कर्म करते उनके संग नही रहना ऐसा मेरा धर्मज्ञान है । उंच आचारवालो ने निचकर्मी प्राणीयो के संग कभी नही जाना । उन से दूर रहना ऐसा मेरा धर्मज्ञान है । ।।१३।।

सत्त ग्यान के भ्रम न सांसो ।। सत बेण सब बोले ।।
के सुखराम रात दिन बीच ।। इसो साच नित तोले ।।१४।।

मेरे पास सत्तज्ञान है । वह सत्तज्ञान आने पर कोई भी भ्रम और शंका नही रहती ऐसा मेरा सत्तज्ञान है । मै सच्चा बोलता हूँ । माया कैसे झूठ है और सतस्वरुप ब्रम्ह कैसे सत्य है यह मै जगत जैसे रात-दिन के फरक को तोलती है वैसा नित्य तोलता हूँ ।।।१४।।

सत्त ग्यान ज्हां न नो न लावे ।। देहे बिके ज्याँ ताँई ।।
के सुखराम जत्त तो बाँको ।। बिंद रहे घट माँई ।।१५।।

संसारमे सतज्ञान है । उस सत्तज्ञानमे माँगनेवालेको सतज्ञानी कोई भी वस्तू देनेमे ना नही कहता । वह अपना शरीर बेच देता तब तक वह सत्त रखता । उदा.राजा हरीचंद्र वैसे तू है क्या?जगत मे जती होते है । उदा.हनुमान,कार्तिक स्वामी,गोरखनाथ,लछमन,जिन्होने

ब्रम्हचर्य पाला था वैसा तू है क्या ? ।।१५।।

साखी ।।

जिण कण सूं तर ऊपनो ।। सो फळ डाळा मांय ।।
सुणज्यो सब सुखराम के ।। जड खोज्याँ क्या खाय ।।१६।।

तब उस मनुष्यने कहाँ मुझमे क्या है ये क्या पूछते हो?मै जो कर रहा हूँ उसके जड याने बिजको देखो । तब आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजने कहाँ,उस नरको तथा जगतको उस नरके विधान पे जबाब दिया,कि पेड के मूल याने बीज मे जाने से क्या अलग प्राप्त करोगे?

जैसे–बीज बो दिया वह बीज नही रहा । उसे याने बीज खोजनेसे पेट भरनेवाला नही है क्यों की,बीजसे पौंधा बना,पौंधेको डालियाँ आयी,डालियाँको फल लगे और फलमे बीज आये वह खावोगे तो पेट भरेंगा । इसलिये जिस बीजको बोया उस बीजको खोजनेसे कार्य नही होगा । ।।१६।।

अंछया कण ध्रम पेड हे ।। डाळा बायक होय ।।
लिव छंव्रा सुखराम के ।। ताँ मध वो फळ जोय ।।१७।।

अरे मनुष्य बीजकी बात कर रहा है,सृष्टीमे ज्ञानके बीज भी दो प्रकार के होते है । एक बीज इच्छा का है। इच्छाका है याने मायाका है। इस मायाके बीजसे मायाका धर्म का पौंधा लगता है । इस धर्म पौंधेको मायाके मंत्र,जंत्र लगते है । जगत इस मंत्रसे लिव लगाकर माया के फल की आशा रखता है और फल फलते ही उसके सुख भोगता है ।।।१७।।

हर कण ब्रम्ह पेड हे ।। डाळा सब संसार ।।
हरीजन सो सुखराम के ।। छँवरा फूल बिचार ।।१८।।

दुजा बीज सतस्वरुपका है। सतस्वरुप बीजसे कर्तार ब्रम्हका पेड लगता है जिसे संसाररुपी जीव की डलाये निपजती है। इन डलावो मे से केवली संत निपजते है । जिनका ज्ञान धारन करनेसे जगतके लोग अमरलोक का महासुख लेते है ।।।१८।।

संगत बिना तिरीयो नही ।। ना सुधर्‍यो जग माय ।।
डूबे सोई सुखराम के ।। कू संगत पे जाय ।।१९।।

सतसंगतके बिना आज दिनतक कोई भी भवसागरसे तीरा नही मतलब आज दिनतक किसी का भी जनम सुधरा नही । यानेही सतसंगतके बजाय कुसंगत करनेसे जीव आज दिनतक डूबा ही है कोई तीरा नही ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । दुजे शब्दोमे सतस्वरुप की संगत करोगे तो अमरलोक जावोंगे और महासुख लुटोंगे पंरतु कुसंगत करोंगे याने झुठे ब्रम्हज्ञानीकी संगत करके निचकर्म करोगे याने मांस मछली खावोगे,अमल तंबाखू खावोगे,हलके कर्म करोगे तो डूबोगे,नरकमे पडोगे । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,यह मनुष्य तुम्हे बताता है कि तुम ब्रम्ह हो । ब्रम्ह को

कर्म लगता नही मतलब तुमने कोई भी कर्म किया चाहे वह उंच रहो या निच रहो वे कर्म ब्रम्ह को लगते नही । उसका यह कहना असली ब्रम्हज्ञान के अनुसार सत्य है । मतलब यह कर्म हंस ब्रम्हज्ञानी हे तो नही लगते पंरतु हंस ब्रम्हज्ञानी नही है,उसे विष और पीने देने पे विष भी ब्रम्ह है और अमृत भी ब्रम्ह है यह भासता । उसे विष से मनुष्य मरता और अमृतसे मनुष्य अमर होता यह भासता है तो चाहे वह उंच कर्म करे या निच कर्म करे उसे भोगना ही पडता मतलब मायावी मनुष्य ब्रम्हज्ञानीके नाम पे निचकर्म करेगा तो उसे नरकमे जाना ही पडता इसमे कोई बदल नही होगा ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१९।।

जे साहेब सूं झगडीया ।। आठ पोहोर दिन रात ।।
ज्यां पाई सुखराम के ।। आदु घर की बात ।।२०।।

जो साहेबसे रात-दिन आठ पोहर साहेबका आदुघर पानेके लिये झगडता है उसेही साहेब का आदघर मिलता है मतलब जो साहेबका स्मरन रात-दिन करता है उसेही साहेब का महासुख का देश मिलता है ।।।२०।।

बिन झगडया सुळझे नही ।। सेन सेन सूं आय ।।
जे सुळझे सुखराम के ।। धोका रेहे मन माय ।।२१।।

साहेब से झगडे बगेर मतलब साहेब का स्मरन किये बगेर साहेब का आदुघर मिल गया ऐसा समजनेसे साहेबका आदघर कभी भी मिलता नही । ऐसे साधक के मन मे आगे धोका है यह समजते रहता ।।।२१।।

झगडे लागा राम सूं ।। तब बिसऱ्या सब केण ।।
मे ते मन सुखराम के ।। बोल सके नही बेण ।।२२।।

जब परमात्मासे झगड्ने लगता मतलब लिव लगाके उसका स्मरन करता है साहेबमे मगन हो जाता तब उसमे मनसे उपजनेवाली मै-तू की बाते आती ही नही । इसकारण वह ब्रम्हज्ञानी जगत के ज्ञानीयो समान मै-तू की बाते भूल जाता,बोल नही सकता ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।२२।।

तीन लोक का भोमीया ।। साध सिद्ध मे होय ।।
याँ सूं सुण सुखराम के ।। अर्थ छिप्यो नही कोय ।।२३।।

ऐसे पहूँचे हुये साधू साई के सृष्टी के भोमीया याने हिस्सेदार होते है । जैसे परमात्मा को सृष्टीका हर रहस्य मालूम रहता वैसेही पहुँचे हुये साधूको सृष्टीका हर रहस्य मालूम रहता । ऐसे साधूको जगतके अन्य साधू आदघर पहुँचे या नही मतलब महासुख के मालिक बने या नही यह अर्थ छिप्पा नही रहता ।।।२३।।

जाँ दिन लागे नाँव सूं ।। सो मन बुध रेवे माय ।।
तो प्रगटे सुखराम के ।। अठ सिध नौ निध आय ।।२४।।

जिस दिन इस नाम से लगे हो उस दिन जैसी बुध्दी और मन था वैसे के वैसी बुध्दी और मन हर समय रहने पे अष्ट सिध्दी और नौ निध्दी प्रगट होने मे कसर नही रहती ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।२४।।

साच बिना ऊधरे नही ।। पच पच मऱ्यो अनेक ।।
पण बिण सुण सुखराम के ।। कण नही आवे देख ।।२५।।

साईके विश्वासके बिना किसीका भी उध्दार नही होता । साईमे विश्वास न रखते मायामे विश्वास रखके पच-पचकर अनेक मर गये परंतु एक भी उधरा नही । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,ब्रम्ह पाने के दृढ निर्णय सिवा कण याने ब्रम्ह देख नही पाते । ।।२५।।

क्हे ब्होता सिखे घणा ।। साख शब्द कूं आण ।।
ब्रम्ह भ्यासे सुखराम के ।। सो जन बिर्ळा जाण ।।२६।।

जगत मे साई के देश को कहनेवाले बहुत है,साई के आदघर के संतो ने कथे हुये साख शब्द सिखनेवाले भी बहुत है परंतु जिसे सतस्वरुप ब्रम्ह प्राप्त हुवा है ऐसा संत बिरला है ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।२६।।

साख शब्द कूं सीख के ।। ब्रम्ह बतावे आय ।।
जाँरे सुण सुखराम के ।। फेर जाळ फिर जाय ।।२७।।

कोई पहलेके संतोकी कही हुई साखी शब्द सिखकर दुजोको सतस्वरुप ब्रम्ह बताते है ऐसे ज्ञानी समयके अनुसार सतस्वरुप भूल जाते है और भूल जाने पे मायाको भी सत्त कहते रहते है और मायाकी भी भारी महीमा करते रहते है ऐसे साधकमे हर प्रगटा नही यह समजना चाहिये ।।।२७।।

साख सब्द बिण आगला ।। निर्णा करे अनेक ।।
ज्याँ हर कूं सुखराम के ।। सेंजा लीया देख ।।२८।।

जो साधक अन्य केवली संतोके साखी और शब्दके सिवा भाँती-भाँती आनंदपदके और मायाके निर्णय करता है उसनेही हरको सहजमे देखा है तथा अखंडीत देख रहा है ऐसा जानो । ।।२८।।

ग्यान आगलो सांभळ्यो ।। मगन हुवो मन माय ।।
ज्यां सुणियो सुखराम के ।। हर पायो हे नाय ।।२९।।

जिन्होंने पहलेके दुसरोके कहे गये ज्ञान सुनकर और सिखकर मन मे मग्न हो गये है तो उसे रामजी मिले नही । यह सभी लोग सुन लो ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।२९।।

ग्यान सुण्याँ चेते नही ।। सो बेहरा नर होय ।।
आंधा सो सुखराम के ।। जन से निवे न कोय ।।३०।।

कैवल्य ज्ञान सुना और चेता नही तो समजो वह जीव बहरा है । उदा–जैसे संसारमे बहरे को आवाज सुनाई नही देती चाहे कितने भी आवाज सुननेके इंद्रिये मृतक रहती वैसेही ने:अंछरके आवाज याने ने:अंछर का ज्ञान सुनाने पे चेतता नही तो समजना उसके सतस्वरुप के ज्ञान सुननेके कर्ण मृतक है । कैवल्य संतको देखा और उस संतको नमन नही किया मतलब उस जन का ज्ञान धारन नही किया तो वह जीव अंधा है । उस जीव को सतस्वरुप पहचान ने की
आँखे नही है ।।।३०।।

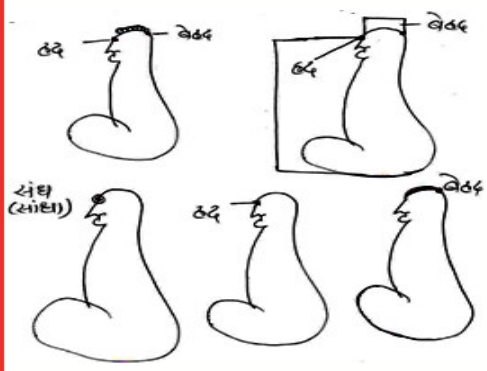

त्रुगटी लग तो हद हे ।। आगे बेहद जाण ।।
दोनू संध सुखराम के ।। नेणा मध बखाण ।।३१।।

त्रिगुटी तक हद है और त्रिगुटी के पार बेहद है । उस हद और बेहद का जोड आँखो के बिचवाले भाग मे है ।।।३१।।

हद मे फिरे सो मानवी ।। बेहद हरीजन जाय ।।
दोनू सिर सुखराम के ।। सो तो ब्रम्ह कहाय ।।३२।।

जो हदतक पहुँचते है वे कालके मुखमे ३ लोक १४ भवनमे रहनेवाले जगतके बराबरीके मनुष्य होते है और जो बेहद तक पहुँचते है वे कालके परे के रामजीके देशके हरीजन है और जो हद बेहद के सांधेपर पहुँचते है वे माया के परे ब्रम्ह मे पहुँचे हुये पंरतु समय के बाद गर्भ मे आनेवाले ब्रम्ह है ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।३२।।

हद बेहद नर क्हेत हे ।। मरम न जाणे कोय ।।
हम जाणी सुखराम के ।। रेहा संध पर सोय ।।३३।।

स्वयम् कथीत ब्रम्हज्ञानी मनुष्य हद और बेहद कहता है पंरतु हद क्या है और बेहद क्या है, माया क्या है,ब्रम्ह क्या है और माया ब्रम्हके परेका सतस्वरुप क्या है यह मरम नही जानता । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है यह मर्म मैने हद याने त्रिगुटी पहुँचकर,ब्रम्ह याने हद और बेहदके सांधेपर पहुचकर और हद तथा बेहद के सांधेके परे बेहद पहुँचकर यह मनुष्य जो ब्रम्ह कह रहा वह ब्रम्ह क्या है यह सांधेपर अनुभव लेकर देखा है ।।।३३।।

पायो पायो क्हेत हे ।। कीयो कुछ नही जाय ।।
तब लग सुण सुखराम के ।। किस बिध मानूँ आय ।।३४।।

इसलिये आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज जगतके लोगोसे कहते है यह स्वयम् घोषीत ब्रम्हज्ञानी मनुष्य पाया–पाया,मैने ब्रम्ह पाया ऐसा कहता है परंतु ब्रम्हज्ञानीके सरीखा चल नही रहा फिर इसे ब्रम्हज्ञानी कैसे मानू?इसे तो जगह–जगह पे माया याने मै तू दिख रहा ।।।३४।।

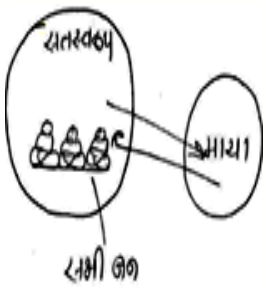

में हरीजन मे ग्रक हूँ ।। जुग जन मेरे माय ।।
अब न्यारो सुखराम के ।। केणे कूं कुछ नाय ।।३५।।

हरीजन हो जाने पे हरीजनको मै सभीमे ओतप्रोत हूँ तथा सभी हरीजन मुझमे है ऐसा ज्ञान होता है । हरजनको हरको सिवा न्यारा कही दिखता नही तो कहने के लिये अलग क्या रहा ? ।।३५।।

आठ सिध्ध नौ निध प्रगटी ।। साँसो रेयो माय ।।
तिण नर सुण सुखराम के ।। हर पायो हे नाय ।।३६।।

अष्ट सिध्दी तथा नवनिधी प्रगटी कहते हो परंतु मनमे संशय है कि,मै कालके मुखसे छुटूँगा । या नही तो आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ऐसे नर को हर मिला नही ।।।३६।।

साँसो दुबध्या ऊठगी ।। भै भ्रम दीया खोय ।।
वे तो सुण सुखराम के ।। जन हर अेकी होय ।।३७।।

और संशय और दुविधा मिट गयी तथा काल का भय मिट गया । माया को छोडा हूँ तो सुखो मे कसर पडेगी यह भ्रम मिट गया बल्कि दृढ विश्वास यह हो जाता की अब सदा के लिये सुख मिलेगे । ऐसी स्थिती जब संत की बनती तब वह संत और हर याने रामजी इनमे फरक नही होता वे दोनो एक होते है ।।।३७।।

माहे लागा ख्याल सूं ।। सो निर्गुण पद जाण ।।
बाहेर सुण सुखराम के ।। सुरगुण नांव बखाण ।।३८।।

जो संत शरीर के अंदर विज्ञान से लगे है वे निरगुण पद याने आनंदपद के भावी वासी है यह जानना । तथा जो मनुष्य बाहर के भक्ति मे लगे है वे सरगुण नाम से लगे है ऐसा समजना । इनकी पहुँच माया मे ही है सतस्वरुप मे नही है ऐसा जानना ।।।३८।।

भ्यास्यां का अे नाण अे ।। भ्रम न ऊठे कोय ।।
पायाँ तो सुखराम के ।। मेहे बूठाँ धर जोय ।।३९।।

जिसे रामजी प्राप्त हुये है उनके दिलमे मुझे रामजी याने हर मिला या नही मिला यह भ्रम नही रहता । जिसे हर मिला है उसे जैसे बारीश मे जमीन भिग जाती है वह जगत के किसी प्राणी से छिपती नही ऐसा ही रामजी पाया हुवा हरीजन जगत मे छिपता नही ।।।३९।।

भ्यास्यां बिन बाणी नही ।। बिन पायाँ नही नूर ।।
निपज्याँ बिन सुखराम के ।। नही हे राम हजूर ।।४०।।

जिसे हर याने रामजी याने परमात्मा प्राप्त हुवा नही ऐसे संत की परमात्मा प्रगट हुये की बाणी नही रहती,माया की बाणी रहती । ऐसे संतके मुखपर हर पाने का तेज नही रहता । घट मे हर याने रामजी न प्रगट होने के कारण ऐसे मनुष्य रामजी के बेमुख रहते और

माया के सनमुख रहते है ।।।४०।।

पेलो पर्चो ग्यान हे ।। दूजो अणभे जाण ।।
तीजो सुण सुखराम के ।। हंस चेहटे आण ।।४१।।

जिसमे रामजी प्रगट हुवे उनका पहला परीचय यह है कि उन्हे रामजीका ज्ञान उत्पन्न होगा और वही प्राप्त किया हुवा ज्ञान जगतमे बोलेंगे । दुजा परीचय यह है कि वे जगतके लोगोमे से जो सनमुख आयेंगे उनके घटके अंदर रामजीका अनुभव करा देगे । इसकारण उस संत के शरणमे नित्य नये–नये चतुर हंस आनेका सिलसिला बना रहता ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।४१।।

कागद केरा फूल पर ।। भंवर न बेसे आय ।।
पोफ फूल सुखराम के ।। माडाँ धकेल्या जाय ।।४२।।

जैसे कागजके फुलपर भँवरा आकर नही बैठता परंतु वही फुल असली है तो भँवरे को जबरदस्ती से भी दूर ढकेला तो भी वह पुन: असली फुलपर आकर बैठता । इसीप्रकार मुमुक्षू (हंस)याने माया क्या और ब्रम्ह क्या यह समज चाहनेवाला हंस केवली साधूके पास जुड्ते ही रहेगा वह हंस नकली साधू याने मायाके ज्ञानके साधूके पास नही जायेगे । यह उस केवली साधूकी परीक्षा है ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर–नारी को कह रहे है । ।।४२।।

ग्यान बास जन चंदन हे ।। भयंग जीव कहाय ।।
चेटयाँसू सुखराम के ।। अंग ताप सब जाय ।।४३।।

जैसे चंदनके पेड की सुगंध को समजकर भुजंग याने साप चंदनके पेड्को लपेट जाता है और अपने शरीरके अंदरकी तपन मिटा लेता है ऐसे हंस कालके तपनसे मुक्त होनेके लिये ने:अंछरी साधूके शरणमे आता है और अपने तनकी,मनकी और आ–आके गिरनेवाली ताप सदा के लिये मिटा लेता है ।।।४३।।

भोजन ब्हो प्रकार का ।। न्यारा केबत घाट ।।
जीमे जब सुखराम के ।। अेकी मुख की बाट ।।४४।।

जैसे भोजन बहुत प्रकार के होते है । उनके रुप भी अलग–अलग होते है परंतु भोजन करते है तो मुखके रास्तेसे ही । ऐसेही माया और ब्रम्हके ज्ञान अलग–अलग होते है पंरतु ज्ञान स्विकारना है तो हंसके निजमनद्वारा ही लिया जाता है बिना हंसके निजमनसे नही किया जाता । ।।४४।।

चौपाई ।।

तुम भी साच हम भी साच ।। ज्यां मन ठेऱ्या सोई ।।
के सुखराम अने काँ अेही ।। अे जन अेक मे होई ।।४५।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज ज्ञानी मनुष्य को कह रहे तुम भी सच्चे हो और मै भी

सच्चा ही कह रहा हूँ । सच मे देखोगे तो हरजन मे वह साई है और सभी उस साई मे ही है । साई तो सत्य है वह तो झूठा नही है इसलिये तुम भी सच्चे हो और मै भी सच्चा हूँ । मेरा मन कैवल्य मे लगा इसलिये मै सत्य हूँ और तुम्हारा मन माया मे लगा और माया मे सतस्वरुप है इसलिये तुम भी सत्य है ।।।४५।।

रावळ सांग ब्होत ले आया ।। ख्याल सांग जो कीया ।।
के सुखराम ज्याँ जो रिज्यो ।। तहाँ दान ले दीया ।।४६।।

जैसे तमाशा करनेवाले लोग अनेक प्रकार के स्वांग बनाते है । तमाशा देखनेवाले लोगको जो स्वांग पसंद आया उसको ही दान देते है याने पैसा देते है दुजेको नही देते । ऐसेही कुछ जन परमात्मा को पसंद करते है,उससे लिव लगाते है और कुछ जन माया को पसंद करते है उस माया से लिव लगाते है । सही देखा तो सभी मे राम ही राम है दुजा कुछ नही है ।।।४६।।

साखी ।।

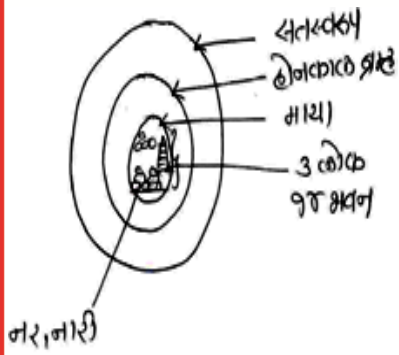

जन की जैसी भावना ।। ते साही हर होय ।।
बिन साहेब सुखराम के ।। दूजो सुण्यो न कोय ।।४७।।

जन की जैसी भावना याने मनुष्य की जैसी भावना रहती है उस प्रकार साहेब मनुष्य के लिये बन जाता है । साहेबके सिवा दुजा कोई ऐसा आजतक किसीने सुना नही है क्योंकी, सतस्वरुप ब्रम्ह सभीमें ओतप्रोत भरा है और सभी ३ लोक १४ भवन,७ द्विप आदी सभी साहेबमे है मतलब सभी ब्रम्ह,माया,३ लोक,१४ भवन,सभी नर–नारी मे सतस्वरुप साहेब ही है ।।।४७।।

जिण बाणक ज्या ओळख्यो ।। तिण घाटे ईतबार ।।
ज्यूं जैसा सुखराम के ।। प्रगटे सिर्जण हार ।।४८।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,हंसने साहेबजीको जिस तरहसे पहचाना है और पहचानने पे जैसा विश्वास आ गया है वैसाही वह साहेब मतलब सिरजनहार उसके लिये प्रगट होता है । इसप्रकार साहेब सभी में बनता है ।।।४८।।

धन जोबन को छाकीये ।। मुरडायो नर जाय ।।
पिस्ता सी सुखराम के ।। जाँ दिन पकडयो आय ।।४९।।

मनुष्य धन तथा जवानीके नशामे साहेब से मुरडाया रहता है मतलब अकडा हुवा रहता है और यह भूल जाता की यह धन तथा जवानी साहेब ने दी है इसलिये इस धन का तथा जवानी का उपयोग साहेब पानेके लिये करनेसे पूरा सुख मिलेगा । साहेबकी वस्तूवो से जैसे धन और जवानी मिलनेसे सुख मिलता है तो साहेब पानेसे कितना सुख मिलेगा । ऐसे मनुष्य को साहेब प्रगट किये हुये संत भी मिलते है भाँती–भाँतीसे ज्ञानसे समजाते है

परंतु मनुष्य अपने मनके विषय वासनावोके मस्तीमे साहेबको प्रगट करना चाहता नही बल्कि साहेबसे बेमुख होकर मनके कहते वासनावोके निचकर्म करता । अंतीममे धन और जवानी खतम् हो जाती और कुकर्म के बदले काल मनुष्य को पकड ले जाता तब वह मनुष्य भारी पछ्ताता ।।।४९।।

बांस बिना चेंटे नही ।। भंवर पोफ कुं आय ।।
आ पारख सुखराम के ।। करलो संता माय ।।५०।।

खुशबुके सिवा भँवरा फूल को चेटता नही मतलब फूल को लूंबता नही,फुलपर आकर बैठता नही । जैसे–कागजका फुल होगा तो भँवरा उसपर बैठेगा नही । फूलको भवरा लूंब रहा है याने उसपर आके बैठ रहा है मतलब फूलमें गंध है,फुलमें बाँस है ऐसेही संतो की परीक्षा है । ।५०।

गुण प्रगटयाँ बिन बाहेरो ।। जुग नही लूंबे कोय ।।
आ पारख सुखराम के ।। जन की सांची होय ।।५१।।

जैसे फुल मे बास याने खुशबू न होनेसे भंवरा फूल को चेटता नही,लुंबता नही इसीप्रकार जगत के मनुष्य को जगत नही लूंबता याने जगत के मनुष्य मे कोई गुण प्रगट हो तो ही जगत के मनुष्य उस जन को चेटते । यह परीक्षा संत की सच्ची है मतलब संत मे गुण प्रगटने पे ही संत को जगत के लोग मानते ।।।५१।।

गुण गुण माँ ही फेर हे ।। बास बास मे जाण ।।
जक्त जक्त सुखराम के ।। भंवर भंवर मे ठाण ।।५२।।

जैसे फुलके बास–बासमे फरक रहता है वैसेही भंवरे–भंवरेमे भी फरक रहता है । सभी भंवरे सभी फुलो पे नही ड्किते । कुछ भंवरे कुछ फुलो पे ड्किते तो कुछ भंवरे कुछ फुलो पे ड्किते । इसीप्रकार संतके गुण–गुण मे फेर है । संत भी दो प्रकार के होते है ।

१ एक संत अमरलोक के सुख प्रगट कर देनेवाले होते है ।

२ दुजे संत परचे चमत्कार के याने माया के सुख प्रगटकर देनेवाले होते है ।

इसप्रकार जगतमे भी दो प्रकार के भक्त होते है ।।।५२।।

बास भंवर गत अेक व्हे ।। ज्हाँ जो चेंटे आय ।।
यूं दुनियाँ सुखराम के ।। जन सूं लूंबे जाय ।।५३।।

फुल की बांस याने गंध और भँवरा चाहनेवाली बांस एक होने पे ही भँवरे उस फुल को जाके ड्किते । वे भँवरे दुजे बांसवाले फूलो को नही ड्किते । ऐसेही जिन्हे अमरलोक चाहिये सदा के लिये सुख चाहिये ऐसे मनुष्य अमरलोकके सुख प्रगट कर देनेवाले संत के पास ही जायेंगे और जिन्हे मायाके सुख चाहिये वे मायाके परचे चमत्कार करनेवाले संतके ही पस जायेंगे । ।।५३।।

बारे बाबो ऊजळो ।। देखत हे सब कोय ।।

भीतर तो सुखराम के ।। बोल्यां सूं गम होय ।।५४।।

कभी–कभी जगत के लोग अमरलोक का सुख चाहते,मोक्ष चाहते है,८४००००० योनीके फेरे से निकलना चाहते परंतु संत पहचान नही पाते । संत बाहरसे उजला दिखता मतलब संत का बाहरसे रहना,चलना केवली संतके समान दिखता माया के परे का दिखता परंतु वह संत जब बोलता याने ज्ञान समजाता जब समजता की इसके भितर परमात्मा नही है,इसके भितर माया ओतप्रोत भरी है मतलब काल भरा है ।।।५४।।

राती किया क्या हुवे ।। दिन ही जुँझ्या जाण ।।
युं सिंवरण सुखराम के ।। समझ्या सरस बखाण ।।५५।।

ऐसे परमात्माको पानेके लिये ८४००००० योनीमे परमात्मासे बिनती की,मनुष्य देहके गर्भमे बिनती की,८४००००० योनीका दु:ख भोगा,गर्भका दु:ख भोगा,जगह–जगह भटक कर संत मायावी है या सतस्वरुपी है यह खोजा अंतीम मे सतस्वरुपी संत मिला । ऐसे संत मिलने पे परमात्मा का स्मरन किया वे महान है ।।।५५।।

रात रात तो दोडीयो ।। दिन ऊगे रहे बेस ।।
सो मुरख सुखराम के ।। सब नर नारी केस ।।५६।।

जो मनुष्य साहेबके लिये ८४००००० योनीमे तड्पा,गर्भ में तड्पा और साहेब प्रगट कर देनेवाला संत मिलने पे स्मरन करनेका समय आया तो स्मरन करना भूल गया और मायाके करणीयोमे लग गया । वे सभी नर–नारी मूर्ख है,बेसमज है,बेअकली है,गंवार है ।।।५६।।

सुलटो तो सब के फिरे ।। उलटो चडेस साच ।।
सब सूं सुण सुखराम के ।। आ इध की हे बाच ।।५७।।

संखनाल का रास्ता तो सब का ही होता है । माँ के पेट मे आये वह संखनाल का रास्ता है । जिस रास्ते से आये उस रास्ते से वापिस फिरना यह पहले से ही सबको प्रगट रहता है पंरतु यह फिरना सही फिरना नही है । इससे गर्भ में आना नही छुटता । उलट के बंकनाल के रास्ते से चढोगे तो वापिस गर्भ मे नही आवोगे यही सही फिरना है यह सभी जन सुनो । बंकनाल का रास्ता प्राप्त करना यह उंची बात है ।।।५७।।

करण हार तो राम हे ।। प्रालब्द के हात ।।
मो सिर तो सुखराम के ।। जस कुजस की बात ।।५८।।

सर्व सृष्टीमे करनेवाला सिर्फ रामजी है । रामजी ने मुझे मेरे ही संचित मे से प्रालब्ध दिये है । प्रालब्धके अनुसार मेरे सिरपर मायामे जस कुजस आते ऐसा ज्ञानी,ध्यानी समजते ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते ।।।५८।।

जब लग के भ्यासो नही ।। जे सिंव्रण की ढील ।।
भ्यास्यो ज्याँ सुखराम के ।। सब बाँता की हील ।।५९।।

इसपर आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते उस मनुष्यको कहते है कि प्रालब्धके जस कुजसके परे परमात्मा है वह परमात्मा मिला नही कारण उसने परमात्माके स्मरनमे ताकिदी करता तो साहेब उस मनुष्यके घटमे भ्यासता और सब हर पाने के चेन हो जाते थे ।।।५९।।

हर भ्यास्यां तहाँ जाणीये ।। आट पोहर लिव ध्यान ।।
नई तर तो सुखराम के ।। केणे को मुख ग्यान ।।६०।।

कुछ मनुष्य हर भ्यासा करके बताते है परंतु उनकी लिव और ध्यान माया मे रहता । इसपे आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा अगर हर भ्यासा है तो उस संत की लिव और ध्यान साई मे रहेगा मायामे नही रहेगा । माया मे लिव और ध्यान रहता है तो उसे हर भ्यासा नही वह सिर्फ मुख से बोलता है कि मुझे साहेब मिला है ।।।६०।।

ओऊँ दही बिलो विंया ।। अंच्छा घी छंट जाय ।।
न्यारो कर सुखराम के ।। त्रगुटी मे जन खाय ।।६१।।

दही को बिलोने से छाछ से घी अलग छट जाता वैसेही त्रिगुटी मे ओअम् याने बावन अक्षरोके राम इस माया शब्द से तत्त याने र शब्द अलग छट जाता । उस शब्द का आनंद संत त्रिगुटी मे लेता ।।।६१।।

अंछा घी जब पी गया ।। तब जन हुवा राम ।।
इण आगे सुखराम के ।। केवळ को सत धाम ।।६२।।

ऐसा छाछ से अलग हुवावा घी पिनेवाला तनमस्त हो जाता है ऐसाही त्रिगुटी मे रक्कार प्रगट करनेवाला कालसे मुक्त हुवावा राम हो जाता है । इस त्रिगुटीके आगे केवल याने माया मुक्त सतधाम है ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।६२।।

नर नारी सब फिरत हे ।। सेर सेर के माय ।।
गढ ऊपर सुखराम के ।। बिर्ळो किणी संग जाय ।।६३।।

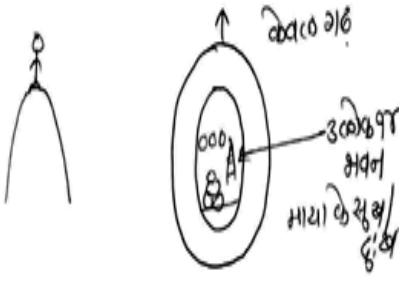

जैसे जगतमे नर–नारी शहर–शहरमे घुमते है । परंतु गढ उपर कोई बिरला ही जाता है ऐसही सभी नर,नारी होनकालके ३ लोक १४ भवनमे माया के सुख,दु:ख मे घुमते है । होनकालके परेके केवल गढमे कोई सतगुरुके संग से बिरला ही पहुँचता है ।।।६३।।

ललोपतो कर राखीयो ।। सो सिष सुधरे नाय ।।
सेवग सुंई सुखराम के ।। कुछ माफक सो कुवाय ।।६४।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजने संत को चेतावणी दि है कि,शिष्य को खुशामत कर–करके रखने से शिष्य सुधरता नही । ऐसा शिष्य जो नौकरी पे रहनेवाले नौकर से भी हलका है ऐसा समजो । नौकरी पे रहनेवाला नौकर भी अपने मालिक के अग्या मे रहता ।

जबकी इसका लेना –देना तो सिर्फ माया के व्यवहार पुरता ही होता है परंतु गुरु–शिष्य का व्यवहार आवागमन काटने से रहता है । ऐसे आवागमन काट देनेवाले संत के आज्ञा मे जो शिष्य नही रहता ऐसे शिष्य की गुरु खुशामत करता उस गुरु का गुरुधर्म सही नही यह समजना ।।।६४।।

ज्यां ने प्रगट पूजीये ।। जिण घर जीम्या हाण ।।
सुणज्यो सब सुखराम के ।। आ तुम करो पिछाण ।।६५।।

इसकी पहचान जगत के लोगो तुम करो–शिष्य गुरु की प्रगट पूजा करता और गुरु के यहाँ भोजन करने पे नुकसान होगा यह समजता और ऐसे शिष्य की गुरु खुशामत करता यह कैसे सही है ? यह तुम ज्ञान से समजो ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।६५।।

खांचा ताणो करत हे ।। थाप उथाप जग माय ।।
जब लग सुण सुखराम के ।। हर पायो हे नाय ।।६६।।

ऐसा शिष्य मायाको सामने रखते हुये गुरुज्ञान को खिचते ताणते–रहता(खिचातानी करते रहता),थापता उथापता तो समजना उस शिष्य को साहेब मिला नही । जैसे गुरु को पुजता यह विधी सही है यह बताता साथ में गुरु के यहाँ खाना क्यों नही खाता?खाने मे कैसा दोष है ऐसा कोई भी माया का कारण खिचताणके शिष्य बताने की कोशिश करता समजता उसको साहेब मिला नही ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते ।।।६६।।

पाहण ऊपर भाण रे ।। तपीयाँ गळे न कोय ।।
सुणज्यो सब सुखराम के ।। गडो तुर्त जळ होय ।।६७।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज ने शिष्य के कुछ प्रकार बताये है । जैसे पत्थर पर सुरज कितना भी तपा तो भी पत्थर गलता नही इसीप्रकार पक्के मायावी जीव को कितना भी ज्ञान दिया तो भी वह साहेबको धारन करेगा नही परंतु गार को थोडी भी गरमावत लगी तो वह जल हो जाती ऐसेही सतस्वरुपी वैराग्यवृत्तीके हंसको ज्ञान देते ही ज्ञान धारन कर लेता और साहेब के आदघर पहुँच जाता ।।।६७।।

केईक जीव सुण धात सा ।। केईक पाहण सम होय ।।
केईक जीव सुखराम के ।। लाख मेण सा जोय ।।६८।।

ऐसे कोई जीव धातूके समान होते है । कई जीव पत्थर समान होते है । कई जीव लाख सरीखे होते है । कई जीव मोम के समान होते है ।।।६८।।

केईक जीव घी खांड सा ।। केईक नाज सम होय ।।
केईक जीव सुखराम के ।। गडे स्वरूपी जोय ।।६९।।

कई जीव घीके समान होते है । तो कई जीव अनाजके समान होते है । तो कई जीव शक्कर के समान होते है तो कई जीव गार के समान होते है ऐसा आदी सतगुरु

सुखरामजी महाराज ने बताया ।।।६।।

घ्रत खांड बी प्रगळे ।। लाख मेण बी जोय ।।
पण पथर तो सुखराम के ।। प्रथ गळे नही कोय ।।७०।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,जैसा घी पिघलता,शक्कर पिघलती,लाख पिघलता और मोम भी पिघलता परंतु पत्थर तो कुछ भी करनेपर पिघलता नही । उसीतरह जो जीव घी के समान,शक्करके समान,लाखके समान,मोमके समान होते है ऐसे जीव ज्ञान धारन कर लेते परंतु पत्थर के समान जो जीव होते है उन्हें कितना भी ज्ञान दिया तो भी वह ज्ञान धारन नही करते ।।।७०।।

धात गळे सुण आग सूं ।। पण सोगी बिन नाय ।।
पाळे कूं सुखराम के ।। गळता बार न काय ।।७१।।

कुछ जीव पत्थर के समान होते जो बिलकुल ज्ञान धारन करते नही और कुछ जीव गार जैसे है जो थोडासा ज्ञान मिलते ही ज्ञान धारन कर लेते । न गलनेवाले और गलनेवाले इनके बिच के जीव के बारे मे आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज बताते है ।

धातू

लाख– जबतक आग के पास रहते तबतक पिघले रहते आग से दुर होते ही कड्क हो जाते ऐसेही जब तक कैवल्य ज्ञान में रहेंगे तबतक ही मानते और ज्ञान से बाहर निकले तो कौनसा कैवल्य ज्ञान साफ मुकर जाते ।

घी– जैसे घी को आँच लगते ही पिघलता वैसही घी के समान जो जीव होते है वह संत सतगुरु देखते ही,उनका बोलना,रहन,सहन देखते ही वह तुरंत ज्ञान धारन करते परंतु संसार के लोगो मे गये की उनके जैसे हो जाते ।

अनाज– जैसे लोगो को पहले ठंडा ज्ञान याने मिठा ज्ञान देना पडता । होनकाल के दु:ख, अमरलोक मे ऐसा सुख है और फिर गरम याने कड्क ज्ञान देना पडता याने जो उन्हे पसंद नही अैसा ज्ञान देना पडता ।

शक्कर–शक्कर के समान जीव को ठंडा याने मिठा ज्ञान देना पडता तब वह जीव ज्ञान धारन करता ।।।७१।।

सत्त संगत पल की भली ।। करसी ब्हो गुण ज्योय ।।
जुग जुग मे सुखराम के ।। सेंस गुणों फळ होय ।।७२।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,सतस्वरुप की संगत पल की भी हुई तो भी वह बहुत उंची है,बहुत गुणकारी है और माया के ज्ञान की संगत सदा भी हुई तो भी उसमे

काल का धोका है । यह पलभरकी संगत अमरलोक जाने सरीखा भारी गुण करेगी । जबतक हंस अमरलोक जाता नही तबतक होनकालमे हंसको युगानयुग हजारोपट कालसे बचाने सरीखे उंचे फल देयेगी । मायाके पर्चे चमत्कार की तरफ जाने नही देगी भुत,प्रेत बनने नही देगी,नरक मे जाने नही देगी और ८४००००० योनीयोमें भी उपर ही उपर रखेगी । संगत सुनने के बाद यह हंस होनकाल भूल जाता और परमात्मा की सबकुछ है ऐसा उसे लगता ऐसा पल । फिर वह क्षणभर के लिये क्यो नही हो ।।।७२।।

नेणा बिन सुझे नही ।। बिन लागाँ नही चीत ।।
भ्याँस्यां बिन सुखराम के ।। अग्यानी की रीत ।।७३।।

जैसे मायावी वस्तू मायावी नैनो ने कभी भी देखी तो भी याद आती । जैसे किसी को भारी ठोकर लगी तो उसका ठोकर के जगह मे चित रहता ऐसेही जिसे परमात्मा मिला है उसका चित सदा परमात्मा मे ही रहेगा । जिसका चित परमात्मा मे नही है,माया मे है तो समजना यह अज्ञानी है उसे हर मिला नही ।।।७३।।

सतगुर की संका नही ।। भै डर प्रथन होय ।।
से सिष तो सुखराम के ।। प्रथन निपजे कोय ।।७४।।

जिस शिष्य को सतगुरु की मर्यादा नही,सतगुरु का डर बिलकुल नही तथा सतगुरु का भय मन मे रखता नही ऐसे शिष्य मे परमात्मा कभी भी प्रगट होगा नही ।।।७४।।

हर गुर अेकी जाणीये ।। सत्तगुर फेर बसेख ।।
जे निपजे सुखराम के ।। जुग जुग मे संत देख ।।७५।।

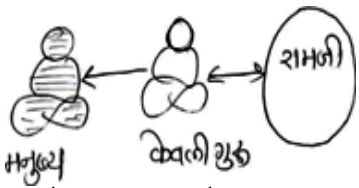

जिस जिस मनुष्यने केवली गुरु याने संतको और रामजीको एक माना है । तथा जिसने भेद मिलता ऐसे सतगुरुको रामजीसे भी विशेष माना है उन मनुष्यमे परमात्मा प्रगट हुवा है । ऐसे समजनेवाले मनुष्य युगानयुग से मनुष्य के संत बने है यह प्रगट दाखला देख लो ।।।७५।।

गज माने आंकस सही ।। युं गुर को डर होय ।।
से सिष कूं सुखराम के ।। काळ न झापें कोय ।।७६।।

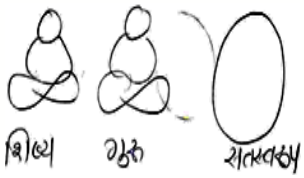

जैसे गज याने हाथी आंकसको डरता है वैसही सतगुरुको परमात्मा समजके डरता है,परमात्मा समजके मर्यादा रखता है उस शिष्य पे काल कभी भी झडप नही डालेगा ।।।७६।।

जब लग झूठा बेण व्हे ।। तब लग सिद्ध न होय ।।
सिध्ध साधक सुखराम के ।। क्या नर नारी लोय ।।७७।।

जबतक जिसके कहे हुये वाक्य झूठ हो जाते है तबतक उसे सिध्द समझो मत क्योंकी सिध्द उसीको कहते जिसका कहना सच होता । फिर वह सिध्द हो या साधक हो या फिर कोई भी नर–नारी हो जिनके बोल(वचन)सच नही होते तबतक उसे पूरा सिध्द

समझो मत जगत के बराबरी का मनुष्य समझो । ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे ।।।७७।।

सिर जावे तो जाण दो ।। झूट न बोलो कोय ।।
साहेब तो सुखराम के ।। साच बेण मे होय ।।७८।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के लोगो को कहते है कि,सिर काटे गया मतलब कितना भी भारी नुकसान हुवा तो भी होने दो,झूठ मत बोलो । झूठ मे यम बैठा है । वह घेर के उससे भी भारी नुकसान करायेगा । इसलिये झूठ न बोलते हुये सत्य बोलो,सत्य मे साहेब बसता है वह कैसे भी नुकसान से बचायेगा या हुयेवे नुकसान से फायदे मे ला देगा ।।।७८।।

काया कस करणी करे ।। मुख बायक हे झूट ।।
तब लग सुण सुखराम के ।। पच खाली गये ऊठ ।।७९।।

काया को कष्ट दे-देकर वेदो की करणीयाँ करता है(व्रत,तप,उपवास आदी)परंतु मुखसे झूठ बोलता है ऐसे साधक किंतने भी पच गये तो भी उनको माया के करणीयो के भी फल नही लगेगे तो उनके घटमे साहेब कैसे प्रगटेगा?ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत को कह रहे है ।।।७९।।

झूट पाप को पेड हे ।। साच पुन्न की चूळ ।।
नाव निझ सुखराम के ।। असल मोख को मूळ ।।८०।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है झूठ बोलना यह पाप याने नरक मे पड्ने का पेड है तथा सत्य बोलना यह पुण्य याने स्वर्गादिक मे जाने की जड है तथा निजनाम का स्मरन करना अस्सल मोख याने महासुख का देश पाने का मूल है ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।८०।।

समझ्याँ बिन सिवंरण नही ।। कण बिन केसा भोग ।।
चडीयाँ बिन सुखराम के ।। क्या त्यागी तन जोग ।।८१।।

निजनाम क्या है यह समजे बगेर तथा निजमन से स्मरन करे बगेर साहेब नही मिलेगा । जैसे अनाजके सिवा भोजन नही हो सकता,पेट नही भर सकता वैसेही मायासे चित निकालकर सतस्वरुपका स्मरन नही किया तो साहेब नही मिलता । शरीरपे भेष योगका धारन करके, संसार छोड्के योगी नही होता । योगी तो वही होता जिसने ५ आत्मा और मनको त्याग दिया, त्रिगुणी मायाको त्यागा और बंकनालके रास्तेसे ब्रम्हंड्मे चढ गया वह सच्चा योगी होता है । ।।८१।।

स्वर्ग नर्क हर बिन नही ।। सुणो सकळ जन आण ।।
सत्तगुर बिन सुखराम के ।। आ नही पडे पिछाण ।। ८२।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी जगत के लोगो को कहते है स्वर्ग,नरक हर

मतलब रामजी बिना नही है परंतु सच्चे सतगुरु धारन नही किये तबतक स्वर्ग मे भी हर है और नरक मे भी हर है यह नही समझ सकता । सतगुरु धारन करने पे सतस्वरुप सभी मे है और सभी ३ लोक १४ भुवन,स्वर्ग,नरक यह हर मे है ऐसा साफ साफ दिखता ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।८२।।

बावण अंछर बाहेरो || तेपन गहयो न जाय ||
सुण ग्यानी सुखराम के || समज सोच मन मांय ।।८३।।

बावन अक्षरमे साहेब नही है । ५२ अक्षरोसे साहेब प्रगट नही किए जाता मतलब ५२अक्षरोके ज्ञानसे,वेद,व्याकरण,शास्त्रके करणीयोसे साहेब घटमे प्रगट नही किये जाते । ५२अक्षर जिसके आधारपर है ऐसा ५३अक्षर जो ओअम,सोहम,अजप्पासे बना है मतलब जिसे ज्ञानी साँस कहते है ऐसे साँसके ओअम,सोहम,अजप्पा की साधनासे भी वह परमात्मा प्रगट किये नही जाता । ऐसा ज्ञानीयोको निजमनसे विचार करनेको आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।८३।।

चोपाई ।।

बावन परे तेपना अंछर || सो सासा दम होई ||
के सुखराम अठा सूं आगे || फेर हरफ हे दोई ।।८४।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ५२अक्षरोके परे त्रेपनवा अक्षर यह साँस है । उसके आगे अधिक दो शब्द है ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज ज्ञानीयोको कहते है ।।।८४।।

साखी ।।

संग बिना तो भाव नही || भाव बिना नही प्रित ||
प्रीत बिना सुखराम के || नही भजन की चीत ।।८५।।

वे शब्द सतगुरुका संग करोगे तो प्रगट होगे । सतगुरुके संगसे सतगुरु यही परमात्मा है यह भाव बनेगा । यह भाव ५४ वा शब्द है यह प्रगटने पे सतगुरुरुपी परमात्माही मुझे कालके मुखसे सहजमे निकाल सकेगे । यह विश्वास हो जाता इसकारण सतगुरुरुपी परमात्मासे प्रिती हो जाती । यह प्रित पचपनवा शब्द है । यह प्रित आतेही हंस सतगुरुरुपी परमात्माने दिया हुवा रामनाम चितमनसे रटन करता और साहेब हंस के घट मे प्रगट हो जाता ।।।८५।।

सासा संग सुखराम के || राम नाम लिव होय ||
तो तेपन की क्या चली || ले पचपन कूं जोय ।।८६।।

साँसाके संगमे मतलब ओअम,सोहम,अजप्पामे रामनाम लिवसे रटन करने पे त्रेपनवा अक्षर याने साँसके साधनाकी बात ही छूट जाती और पचपनवा शब्द प्रगट हो जाता याने सतगुरु से प्रित आ जाती यह दिखता ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।८६।।

तेपन तेपन क्या करे ।। चोपन कहिये मोय ।।
पचपन बिन सुखराम के ।। भेद न लाधे कोय ।।८७।।

वह ज्ञानी ५३-५३कहता है मतलब सोहम-सोहम कहता है । सोहमके सिवा परमात्मा मिलना नही ऐसा कहता है तब आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजने कहा अरे त्रेपन-त्रेपन क्या करता मतलब सोहम सोहम क्या करता त्रेपनके परे का चौपन और चौपनके परेका पचपन बता । पचपनके सिवा सतस्वरुपके देशको याने ने:अंछरको याने सतशब्दको पानेका भेद नही मिलता । ।।८७।।

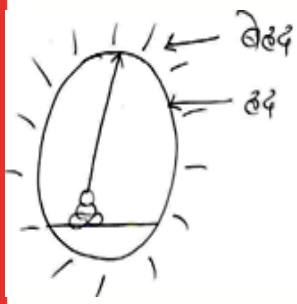

ररे ममे बिन मन सूं ।। तेपन रहे संभाय ।।
वे हदमे सुखराम के ।। बेहद कदे न जाय ।।८८।।

जो ध्यानी रक्कार तथा मक्कारके बिना मनसे हट करके त्रेपन को धारन करता है वह हद मे ही रहता है,वह होनकाल मे ही रहता है,उसे काल खाता है वह बेहद याने महासुख मे कभी नही जाता है ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । ।।८८।।

अेक प्रीत तो ग्यान की ।। अेक कोड की जाण ।।
राम मिले सुखराम के ।। तका पीड की ठाण ।।८९।।

प्रित प्रित मे फरक-एक प्रित ज्ञानकी होती है वह पचपनवा शब्द नही है । इस प्रितमे सिर्फ ज्ञान सुननेकी चाहना रहती है । इस प्रितसे साहेब नही मिलता । एक प्रित कोड्की होती है मतलब सभी सतगुरुके दर्शनको जाते है तो हम भी दर्शनको चलो यह कोड होता है । उस हंसमे परमात्मा पानेकी जैसी चाहना चाहिये वैसे नही होती यह प्रित भी पचपनवा शब्द नही है । एक प्रित ऐसे होती है जिसमे हंसको वासनिक माया खारी लगती है । इस वासनिक माया मे विक्राल जुलूमी काल है ऐसा भासता है । इस कालसे निकालनेवाला सिर्फ रामजी है । ऐसे कालसे नही निकले तो कैसे कष्ट पड्गे इसकी हंसको भारी पिडा होती है और पिडाके चलते सतगुरुसे हंस होनकालसे निकलनेके लिये प्रित करता है उस पचपनवा शब्द कहते है ।।।८९।।

ररे ममे बिन मन सूं ।। तेपन रहे संभाय ।।
से सपने सुखराम के ।। पिछम घाट न जाय ।।९०।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज इस साखी मे कहते है,रक्कार एवम् मक्कार बिना मन से कोई ज्ञानी त्रेपनवा अक्षर याने सोहम धारन करेगा वह ज्ञानी सपने मे भी मतलब कभी भी पश्चिम के घाट से याने बंकनाल के रास्ते से नही जायेगा । ऐसा साधक होनकाल से कभी नही निकलेगा ।।।९०।।

राम नाम सुखराम के ।। रटे प्रीत सूं आय ।।
तो मोख मुगत की क्या चली ।। प्रम मोख मिल जाय ।।९१।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,राम नाम परमात्मा पाने के पिडाके प्रितसे आते जाते साँस मे रटन करेगा तो मोख मुक्ति तो छोड दो अस्सल परममोक्ष याने महासुख का देश ही मिलेगा ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।९१।।

पढया ब्होत सुखराम के ।। जब लग थीर नही कोय ।।
भ्रम गयो दुबध्या मिटी ।। अब भजो नचीता होय ।।९२।।

बावन अक्षरो के ज्ञान बहोत पढने से हंस स्थिर नही होता,क्योंकी ५२ अक्षरो के ज्ञान की उपज इच्छा से है मतलब माया से है । माया अमर नही है,नाश होती ऐसे अस्थिर है । ऐसे ज्ञान या ध्यान का आधार लेने से हंस स्थिर नही होता । जब सतगुरु मिलते,उनका ज्ञान सुनते,ज्ञान से माया क्या है,सतस्वरुप क्या है यह समजमे आता तब हंसको माया यह अस्थिर है यह विश्वास हो जाता और हंस स्थिर होके साहेबको भजता और साहेबको पाता जब हंस स्थिर होता ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।९२।।

अर्थ किया बाणी कथी ।। जब लग जाण्या दोय ।।
भ्रम भागा सुखराम के ।। ज्याँ त्याँ अेकी होय ।।९३।।

जो ज्ञानी माया के अर्थ करता,माया की बाणी बोलता तबतक उस ज्ञानीको साहेब मिला नही समजना । वह ज्ञानी साहेब न मिलनेके कारण साहेब और माया ऐसे दो अलग-अलग जानता है । जिसे साहेब मिलता उसे मायाका अस्तित्व दिखता ही नही उसे सिर्फ साहेब दिखता इसलिये उसे माया और ब्रम्ह ऐसे दो है यह भ्रम नही रहता । सिर्फ ब्रम्ह ही है एसी साफ समज रहती है ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।९३।।

अर्थ थक्या बाणी थकी ।। थकी सकळ रस रीत ।।
जब हंसो सुखराम के ।। गयो त्रगुटी जीत ।।९४।।

अर्थ थका मतलब वेद,व्याकरण,शास्त्र इस मायाके ज्ञान की चाहत थक गयी,मायाके ज्ञान के शब्द बोलनेकी इच्छा नही रही तथा मायाकी करणीयाँ जैसे व्रत,एकादसी,उपवास,तप आदि करनेकी रीत थक गयी तब समजना की हंस त्रिगुटी पार कर गया याने खंड याने ३लोक १४ भवन याने माया का देश पार कर गया ।।।९४।।

चौपाई ।।

ब्रम्ह ग्यान मे हर कन सांसो ।। मे ते कदे न आवे ।।
के सुखराम नेक मन फिरीयां ।। ब्रम्ह ग्यान नही कुवावे ।।९५।।

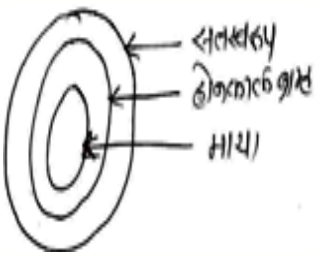

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज स्वयम कथित ब्रम्हज्ञानी के उपर कहते है ब्रम्हज्ञान मतलब होनकाल ब्रम्हज्ञान पाने पे साधक को माया का हर्ष भी नही रहता और काल की फिकीर भी नही रहती । ऐसे साधकमे मै तू ऐसे भाव नही रहता । ब्रम्हज्ञानीको माया दिखती नही सभीमे(होनकाल) ब्रम्ह दिखता । सतस्वरुप ब्रम्ह अमर है ।

उसमे होनकाल ब्रम्ह है तथा माया है ऐसे साधूको सभी मे जैसे सतस्वरुप दिखता वैसेही होनकाल ब्रम्हके साधकको मायामे (होनकाल)ब्रम्ह ही दिखता । जिसे होनकाल ब्रम्ह और माया ऐसे दो दिखते वह(होनकाल)ब्रम्हज्ञानी नही है समजना ।।।९५।।

डेढ होय के मिले हे हर मे ।। सो लगे ब्रम्ह कूं प्यारा ।।
के सुखराम समज दिल भीतर ।। किनि अर्थ बिचारा ।।९६।।

निच घर मे जन्मा जहाँ सभी निच कर्म चलते है । ऐसे मनुष्यने साहेब पा लिया तो वह हंस ब्रम्ह याने साहेबको प्यारा लगता है और जो उंच घरमे जन्मा और साहेब नही पाया वह हंस परमात्माको प्यारा नही लगता । इसका हृदयमे बिचार करो । ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।९६।।

तीन लोक मे देख बिचारी ।। साहेब बिना न कोई ।।
के सुखराम कजी बिन जुग मे ।। निंद्या करे न लोई ।।९७।।

तिनो लोका मे बिचार करके देखो साहेब याने सतब्रम्ह के सिवा दुजा कोई भी नही है मतलब सभीमे सतब्रम्ह है तो फिर जगतमे संतो की और संतोसे जगतकी निंदा क्यों होती?आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है निंदा तभी होती जब सतब्रम्ह शुध्द सतब्रम्ह नही रहता । उस सतब्रम्ह में होनकाली मायावी विषय वासना रहती । इस मायावी निच वासना के कसर के कारण साधू हो या जगत हो इनको काल के दु:ख भोगने पड्ते और इस कसर के कारण निंदा होती है ।।।९७।।

कजी ब्रम्ह की ब्रम्ह बतावे ।। प्रगट जुग के माही ।।
के सुखराम जक्त की जन केहे ।। जक्त संत की कंबाही ।।९८।।

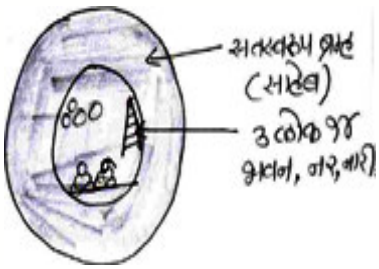

३ लोक १४ भवन मते,९ खंड्में,सभी नर,नारी में ब्रम्ह है मतलब साहेब है । अब जिसकी निंदा होती उसमे भी साहेब है और जो निंदा करता उसमे भी साहेब है मतलब दोनो में भी साहेब है । साहेब दोनोमे होनेके बाद भी संसारी लोगो की निंदा साधू करते और साधू की निंदा जगतके लोग करते ।।।९८।।

ज्यां मे कजी नेक भर नाही ।। तां को निंदे न कोई ।।
के सुखराम घणी तो निंद्या ।। घणी कसर की होई ।।९९।।

जिस साधूमे या संसारी मनुष्यमे कसर नेकभर भी नही होगी तो उस साधूकी या संसारी मनुष्य की कोई भी निंदा नही करेगा । अगर साधूकी या संसारी मनुष्यकी निंदा जगतमे बहोत होती है तो समजना उस साधूमे या संसारी मनुष्यमे बहोत कसर है । जैसे– सतस्वरुपी संत है और होनकाली निच वृत्तीया रखता होगा तो संसारके सतस्वरुपी विचारवाले मनुष्य उस संतकी निंदा करेंगे और जगतके मनुष्य होनकाली वृत्तीया रखते होगे तो सतस्वरुपी साधू जगत के मनुष्य की निंद्या करते है । जैसे–माया के लोगो मे

आपस मे निंद्याका व्यवहार नित्य प्रगट दिखता है । उंच कर्मी मायावी व्यक्ती निचकर्मी मनुष्यकी सदा निंद्या करता है । १)उदा.–दयालू मनुष्य क्रुर आदमी की निंद्या करता है । २)संतोषी आदमी लोभी मनुष्यकी निंद्या करता है क्योंकी,दयालू मनुष्य क्रुर आदमीमे तथा संतोषी मनुष्य को लोभी मनुष्य में भविष्य में दु:ख पडेगा यह दिखता है । इसीप्रकार सतस्वरुपी हंस होनकाली मायावी हंसो की निंद्या करते है क्योकी,सतस्वरुपी हंस को मायावी मनुष्य के काल के दु:ख दिखते रहते है । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजने यह विषय स्वयम् कथीत ब्रम्हज्ञानी के उपर कथा है । ये ब्रम्हज्ञानी,ब्रम्हज्ञानी नही था और ब्रम्हज्ञान के नाम पे सभी निच कर्म करता था और संसारी लोग उसकी निंद्या करते थे । इस स्थितीपर गुरु महाराजने यह तीन साखीयाँ कथी है कि, तेरे में भी ब्रम्ह है और जगत के लोगो में भी ब्रम्ह है फिर तेरी भारी निंद्या क्यों हो रही ? इसका विचार कर । अगर तुझमे शुध्द ब्रम्ह ही रहता था और निच कर्म नही रहते थे तो जगत के लोग तेरी निंद्या करते ही नही थे ।।।९९।।

।। साखी ।।

प्रीत लगी पिव पाविया ।। जिण तिण घाटे जाय ।।
ज्हाँ ज्हाँ नर सुखराम के ।। मगन हुवा मन माय ।।१००।।

सतसंगत याने सत परमात्मा की संगत कही पे भी हो । उसमे खास जगह या खास नाम का साधू ऐसे कोई कारण नही रहता । जहाँ जहाँ पे भी सतसाहेब की संगत होती वहाँ साहेब ही रहता। वहाँ अगर जगत के नर–नारी गये और उस सतगुरु मे बसे हुये साहेब से प्रित लगा ली तो उन नर–नारी मे साहेब प्रगट या प्राप्त होगा और (●) वे हंस खुद के उर से साहेब मे मगन हो जाते ।।।१००।।

पायाँ बिन गर्जे नही ।। मगन हुवो नही जाय ।।
जे व्हे तो सुखराम के ।। थोडा दिन रेहे माय ।।१०१।।

ऐसे नर नारी साहेब पाने पे जगतमे साहेब पाये इसकी गरजना के साथ साक्ष भरते और उस साहेबमे खूब मगन रहते । कुछ साधू जिसने साहेब पाया नही और साहेब पाया ऐसा छूठा ही मन मे मगन रहते ऐसे साधू के लिये आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है वे झूठे मगन होने की कोशिश करते तो भी वे थोडे ही दिन मगन होते फिर जैसे के वैसे संसार के सरीखा पूर्व स्थिती मे आ जाते ।।।१०१।।

जब लिव लागी नही ।। तब लग केणी झूट ।।
सुणज्यो सब सुखराम के ।। आ पारख की मूट ।।१०२।।

साधूको साहेब मिला ही नही इसकी पारख आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज बताते है, परमात्मा हंसको मिला है तो हंस की लिव सिर्फ परमात्मामे रहेगी । मायावी कर्मकांडोमे कभी नही जायेगी । अगर मायावी कर्मकांडोमे लिव जाती है तो समजना उस साधू को

साहेब मिला नही वह झूठ बोल रहा है ।१०२।

सोझी बिन संगत नही ।। बिन समज्यां नही ग्यान ।।
सतगुर बिन सुखराम के ।। नही निरंजन ध्यान ।।१०३।।

जिस साधूको परमात्मा साहेब मिला नही ऐसे साधूकी संगत करना याने साहेबकी संगत करना नही है । ऐसे संगतमे साहेब क्या है यही समजते हो? ऐसा साधू सतगुरु नही रहता । वह होनकाली गुरु रहता । उसमे माया रहती । उसमे काल रहता । ऐसे गुरु की संगत करने पे निरंजन सतस्वरुप परमात्माका ध्यान कैसे बनेगा और वह साहेब घट मे कैसे प्रगट होगा । ।।१०३।।

प्रेम प्रीत ने: चो भयो ।। खरा खरी को आण ।।
जिण जनमे सुखराम के ।। कसर कोर मत जाण ।।१०४।।

ऐसा सोझी याने जानकर खोजो जिसका साहेबसे सच्चा प्रेम है,सच्ची प्रित है और ऐसा जानकर साधू जो कालके डरसे निर्भय होकर निश्चल हुवा है । ऐसे संत की संगत सच्ची है । ऐसे संत मे होनकाली या मायावी कोई कसर नही है यह समजो ।।।१०४।।

प्रीत लगी अक बक भयो ।। जाँ सुण कसर न काय ।।
जोगजिग सुखराम के ।। जपतप सब ही माय ।।१०५।।

ऐसे सतगुरुसे प्रित लगने पे उस प्रितमे वह हंस अकबक हो जाता । ऐसे हंसमे सतगुरुसे प्रेम करनेमे कोई भी होनकाली कसर नही है यह समजो । ऐसे सतगुरुसे अकबक प्रेम हुये वे संत मे तुरंत साहेब प्रगट हो जाता । ऐसा साहेब प्रगट हुये वे संतको मायाके योग–पवन योग, अष्टांग योग,सांख्ययोग आदि तथा सभी प्रकारके यज्ञ,सभी प्रकारके मायावी जप,सभी प्रकारके तप सहजमे अपने आपसे हो गये यह जगतके सभी नर–नारीयो ज्ञान बुध्दीसे समजो । ।१०५।

जप तप करणी जिग सो ।। भजन समो नही कोय ।।
प्रेम सम सुखराम के ।। नाम भजन नही होय ।।१०६।।

जप,तप,वेदो की सभी करणीयाँ,सभी यज्ञ ये सभी साहेब के भजन के समान नही है और साहेबका नाम जप ये साहेबसे प्रेम आने समान नही है ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१०६।।

प्रेम ज्हाँ हर आप हे ।। नेम ज्हाँ गुण होय ।।
अक बक ज्हाँ सुखराम के ।। ब्रम्ह कहावे जोय ।।१०७।।

शिष्य को सतगुरु यह परमात्मा दिखने से जो प्रेम आता वह प्रेम याने ही हर है । उस प्रेम मे ही हर प्रगटने की विधी है । जो शिष्य नियम रखता,मन के हट करता,शरीर के हट करता ये सतगुरु यही साहेब है समजने के गुण नही है,ये सतगुरु माया समजने के गुण है । ऐसे संत मे माया प्रगटी है,साहेब नही प्रगटा यह समजो । आदी सतगुरु सुखरामजी

महाराज कहते है जिस संत मे सतगुरु से अकबक प्रेम है वह संत सतस्वरुप ब्रम्ह ही है यह समजो ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१०७।।

ओर अंग मन घेरीयाँ ।। नेक ब्होत रहे माँहे ।।
ब्रेहे प्रेम सुखराम के ।। हरी मेहर बिन नाँहे ।।१०८।।

हंस मे मन का हट करके मन से नियम पालने के स्वभाव मन को घेरने से कम-जादा प्राप्त हो जाते है परंतु बिरह प्रेम प्रगटना यह हरी मेहर सिवा नही आता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१०८।।

प्रीत लगी ब्याकूळ भये ।। ब्रेहे धाय रही रोय ।।
से हंसा सुखराम के ।। तिरतां बार न कोय ।।१०९।।

हंसमे साहेबके लिये प्रित लगी है उसका हृदय साहेब पाने को व्याकूल बना है । ऐसे व्याकूल स्थिती मे साहेब नही मिलने की हंस मे पिडा पडती और ऐसे व्याकूलता मे हंस को रोना तक आता । ऐसे हंस आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,भवसागर से सहज मे तीर जाते है वे फिर कभी होनकाल के महादु:ख मे नही पडते ।।।१०९।।

सबद पीड भारी घणी ।। मोपे सही न जाय ।।
तन फाटे सुखराम के ।। मन धूजे ऊर माय ।।११०।।

जिस हंस को सतशब्द याने साहेब न मिलने की पिडा बहोत भारी रहती । उस पिडा से शरीर फाटते रहता और मन साहेब से धुजते रहता,डरते रहता ऐसे ही हंस को साहेब मिलता । ।।११०।।

दोय कहे ज्हाँ भ्रम हे ।। अेक कहे ज्हाँ भूल ।।
दोनू सत सुखराम के ।। अेक कहे वे सूल ।।१११।।

कोई दो बताता है वहाँ भ्रम है और एक कहते है वे भी भूले हुये है। ये दोनो सत्य है परंतु एक कहता है वे अच्छा है।(दो यानी माया और ब्रम्ह और एक यानी ब्रम्ह)। ।।१११।।

मन मानी ज्हाँ थिर भयो ।। तहाँ ही पदवी जाण ।।
सुर नर बिच सुखराम के ।। मन सुख एक बखाण ।।११२।।

हंस को मन है तथा तन है । हंस को आदि से ही सुख चाहिये है और दु:ख माँगने पे भी नही चाहिये । मन की पहुँच मायातक होती है । माया के परे सतस्वरुप मे मन नही जाता । हंस का मन सुख मे दु:ख पकड सकता तथा दु:ख मे सुख पकड सकता ऐसा इसका मूल स्वभाव है । जहाँ मन स्थिर रहता वहाँ वह हंस मन का सुख मान रहा ऐसे जानो । जहाँ वह अस्थिर है तब समजो वह हंस मन के दु:ख मे है । इसप्रकार हंस मानव देह मे रहो या देवता के देह मे रहो वहाँ हंस मन से स्थिर हो गया तो वह हंस मन से सुखी है ऐसा जानो।।।११२।।

सुरपुर नरपुर नागपुर ।। तन दु:ख मिटे न कोय ।।

मन सुख तो सुखराम के ।। ज्हाँ समझ्यो ताँही होय ।।११३।।

इसप्रकार-- सुरपुर =देवलोक नरपुर =मनुष्य लोक नागपुर =पाताल लोक

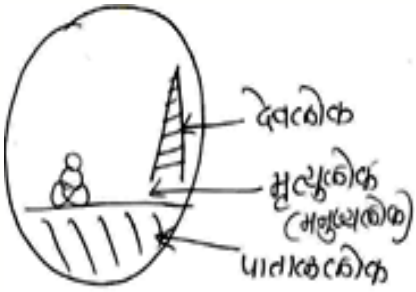

ऐसे तीन लोक तथा भूर,भूवर,स्वर,महर,जन,तप,सत,तल, अतल,वितल,सुतल,तलातल,रसातल,महातल ऐसे १४ भवनमें हंस जहाँ पे भी मन से स्थिर है तो समजो हंस को मन का सुख आ रहा है परंतु देवलोकमे रहे, मृत्युलोकमे रहे या पाताल लोकमे रहे शरीरका दु:ख दु:ख ही रहता मन से उस शरीर के दु:ख को कितना भी सुख मान लिया तो भी वह दु:ख सुख नही बनता ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।११३।।

भावे मानो ग्यान सूं ।। भावे पदवी पाय ।।
मन सुख तो सुखराम के ।। दोनू सरस कहाय ।।११४।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है यह मन को सुख ज्ञान से मानो या पदवी पाने से आवो दोनो प्रकार के मन सुख तो अच्छे ही है ।

१) ज्ञान से मानना-जैसे राजापद मिला था वह किसी कारणसे चला गया तो दु:खी न होते हंसका मन यह समज लेता की प्रालब्धमे इतने ही दिन का राजा था । यह भी नही मिलता तो क्या करता?ऐसे पदवी जानेपे दु:खी न होते ज्ञान से समजकर इस दु:ख मे सुख मान लेता ।

२) पदवी का सुख-अभी तक मै रंक बनके मायाके दु:ख भोग रहा था और वह किसी योग से राजा बन गया । अब मायाके सुख प्रगट रुपमे मन लेता ऐसे पदवीका सुख भोगता । ऐसे ये ज्ञानसे समजनेका सुख तथा पदवी प्राप्त होनेके बाद प्रगट रुपसे सुख यह दोनो भी सुख हंस लेता ये अच्छे ही है ।।।११४।।

तन दु:ख जां दिन जावसी ।। ताँ दिन धरे न देह ।।
निरंजण लग सुखराम के ।। भुक्ते सब नर अेह ।।११५।।

परंतु आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है चाहे जीव सुरपूरमें रहे,नरपूरमें रहे या नागपूरमें रहे उसके तनको सुख मिला तो ही हंस सुखी रहेगा । उसे दु:ख मिला तो कितना भी मनसे मानो उसके तनका दर्द दर्द ही रहेगा,वह दर्द सुख नही बनेगा । उदा- पैरके सांधे पे भाला लगा है । भाले के मारका दु:ख जीव को भारी हो रहा हे । इस दु:खको हंस मन मन से यह मान सकता की अगलेका मुझे मारनेका बदला होगा वह मारके चला गया । अब मेरा बदला खत्म हो गया । इसप्रकार दु:खमे सुख मान लिया गया परंतु शरीरके सांधेको पिडा हो रही वह माननेसे खतम् कैसे होगी?दु:खही दु:ख बना रहेगा । इसप्रकार हंस सुरपूरमे रहो या नरपूरके रहो या नागपूरमे रहो जबतक वह उसे मायाका तन है तबतक मायाका दु:ख लेना ही पडेगा । यह दु:ख उसी दिन जायेगा जिस दिन वह

मायाका शरीर धारन नही करेगा । यह दु:ख हर मनुष्यको होता है,हर हंसको होता है । चाहे उसके पास निरंजन याने कर्तार पदकी पदवी भी रही तो भी वह तनके दु:खसे नही छुटता । यह मायावी शरीर धारन करने की रीत हंस अमरलोक जानेपे ही छुटती है तबतक तनके दु:ख पानेकी रीत नित्य बने रहती ।।।११५।।

चौपाई ।।

ग्यानी सुणो समजणा होई ।। बेक ग्यान सुंई जावे ।।
के सुखराम रोग ही खायाँ ।। फेर स्वाद सुंई आवे ।।११६।।

ज्ञानीयो सुनो ज्ञानसे ही हंस समजवान होता और ज्ञानसे ही बहक जाता । जैसे कैवल्य विज्ञानका ज्ञान सुननेसेही हंस होनकाल छोड देता तथा मायाका पाँच भोगोका ज्ञान सुनने से ही हंस मायाके पदोसे लिव लगा लेता और कालके मुखमे जाता । जैसे रोग दवाई खानेसे ही जाता और वही रोग,रोग होनेवाले स्वादिष्ट पदार्थ खानेसे आता ।जैसे– (शक्करकी बिमारी)यह दवाईसे जाता तथा शक्कर सरीखी मिठी वस्तूएँ खानेपे जान लेवासा बन जाता ।।।११६।।

साखी ।।

माने संक डर ऊपजे ।। तब लग जाणे दोय ।।
के निर्भे सुखराम के ।। अंतर मे भै होय ।।११७।।

मनमे भय उत्पन्न होता,धोका होनेकी शंका उत्पन्न होती तबतक उसे ब्रम्हज्ञान आया नही समजना क्योंकी ब्रम्हज्ञान आनेपे ब्रम्हज्ञानीको सभीमे ब्रम्हही ब्रम्ह दिखता । जैसे– ब्रम्हज्ञानी है उसके सामने भारी जहरीला साप आ गया हो तो उस ब्रम्हज्ञानीको वह साप साफ दिखेगा ही नही उसे वह स्वयम् मे जैसा ब्रम्ह दिखता वैसे दिखेगा । जिसे मैं अलग हूँ और जहरीला साप अलग है ऐसे दिखा मतलब उसे ब्रम्हज्ञान नही है,उसे मायाज्ञान है । मायाज्ञानमें माया और ब्रम्ह ऐसे दो न्यारे–न्यारे दिखते । ऐसा झूठा ब्रम्हज्ञानी उपरसे तो बतायेगा मै निर्भय हूँ,मै ब्रम्ह हूँ,साप भी ब्रम्ह है परंतु अंतरमे भय रहेगा की इस सापने मुझे काट लिया तो मैं मर जाउँगा । ब्रम्हज्ञानीकी मरना जन्मना यह भाषा खतम् हो जाती है क्योकि ब्रम्हज्ञानी सभीमे ब्रम्ह देखता है और ब्रम्ह यह माया नही है तो वह उपजेगी क्यो? और उपजेगी नही तो मरेगी क्या?इसलिये उसे मरनेका डर उपजता नही । मरनेका डर मायाज्ञानीको उपजता है क्योंकि माया जनमती और मरती । इसप्रकार मायाज्ञानी और ब्रम्हज्ञानीका फरक रहता है । मायाज्ञान यह इच्छाका होता ब्रम्हज्ञान यह कर्तार ब्रम्हका होता ।।।११७।।

दु:ख सुख दोनू ऊपजे ।। सुभ असुभ भी आय ।।
तब लग सुण सुखराम के ।। मन की संक न जाय ।।११८।।

सुख दु:ख उत्पन्न होता है,शुभ तथा अशुभ समजता है तबतक उस साधू को ब्रम्हज्ञान समजा नही समजो । उस साधू के उर मे मायाज्ञान ही है यह समजना । मायाज्ञान के

कारण साधू को दु:ख,अशुभ यह उसके मन को सताता है । कर्तार ब्रम्ह के बीज मे सुख और दु:ख दोनो नही एवम् शुभ और अशुभ दोनो नही है । माया के बीज मे सुख और दु:ख दोनो है तथा शुभ और अशुभ ये भी दोनो है । इसका अर्थ साधू ब्रम्हज्ञानी नही है मायाज्ञानी है । इसलिये उसके मन का भय जाता नही ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।११८।।

मान बडाई चाय हे ।। तब लग संक न जाय ।।
सुर नर सब सुखराम के ।। पडदो कर के खाय ।।११९।।

ब्रम्हज्ञानीको मान बडाई नही रहती। कारण उसे जगतमे सभी मनुष्य मात्र मे,पशु-पक्षीयोमे,देवी-देवता मे पारब्रम्ह दिखता है। इसलिये मै तू यह समज रहती ही नही । मान बडाई मै तू यह समज रहने पे ही आती है । यह समज मै तू की मतलब दोस समजने की जगत के नर-नारी मे तथा देवतावों में होती है । जगतके नर-नारी तथा देवता ये माया है यह ब्रम्हज्ञानी नही है। जो ब्रम्हज्ञानी मान बडाई चाहता,उपरसे मान बडाई की चाहत नही बतायेगा परंतु अंतरमे मान बडाई की चाहत है तो समजना यह ब्रम्हज्ञानी झूठा ब्रम्हज्ञानी है वह मायाज्ञानी है और ब्रम्हज्ञान के नाम पे निच कर्म कर रहा है ।।।११९।।

ब्रम्ह ग्यान नही ऊपजे ।। तब लग संक न जाय ।।
भावे सो सुखराम के ।। बुध बळी नर कवाय ।।१२०।।

जबतक ब्रम्हज्ञान याने सब मे ब्रम्ह है यह साधूको उपजता नही तबतक माया और ब्रम्ह एक है उसकी यह शंका जाती नही । वह बुध्दी के बल पे बातो मे स्वयम को बनाते रहेगा तथा जगत को बनाते रहेगा परंतु उस साधक के उर मे भाव ब्रम्ह और माया ऐसा दो रहेगा ही ।।।१२०।।

संक भागी सांसो मिटयो ।। चाय गई सब ऊँठ ।।
तां नर कूं सुखराम के ।। तीन लोक मे छूट ।।१२१।।

ऐसा ब्रम्हज्ञानी जिसे माया और ब्रम्ह अलग-अलग दिखता तथा शुभ-अशुभ,सुख और दु:ख इसकी फिकीर रहती तथा मान बडाई एवम् मायाके सुखोकी चाहना रहती ऐसे ब्रम्हज्ञानी ब्रम्हको कर्म नही लगते ऐसा समजके निचकर्म करते । वे निचकर्म उस साधक को लगते । ये कर्म आगे यमद्वार मे भोगने पडते । ये कर्म उसके माफ नही किये जाते । जो सच्चा ब्रम्हज्ञानी है जिसे विष और अमृत सरीखा दिखता मतलब विष मे भी ब्रम्ह है और अमृत मे भी ब्रम्ह है, शुभ मे भी ब्रम्ह है,अशुभ मे भी ब्रम्ह है । मान मे भी ब्रम्ह है अपमान मे भी ब्रम्ह है । ऐसे ब्रम्हज्ञानी को उंच कर्म मे भी ब्रम्ह दिखता तथा निच कर्म मे भी ब्रम्ह दिखता ऐसे ब्रम्हज्ञानी ने ३ लोक १४ भवन मे कोई भी निचकर्म किये तो उसे कर्म लगते नही इस कारण यम भूगता नही सकता ऐसे छूट रहती ।।।१२१।।

सुख चावे दु:ख प्रहरे ।। तब लग ब्रम्ह गिनान ।।

के मुख सुखराम के ।। उर भ्यासो नही आन ।।१२२।।

सुख चाहता है और दु:ख होवे ऐसी कोई स्थिती आने देना नही चाहता तबतक साधू मुख से ब्रम्हज्ञान कथता उसके उर मे ब्रम्हज्ञान प्रगट हुवा नही समजना ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१२२।।

भ्रम संग दुबध्या गई ।। चाय संग गई चिंत ।।
झूट संग सुखराम के ।। गई बिषे रस मिंत ।।१२३।।

सच्चा ब्रम्हज्ञान प्राप्त हुयेवे ब्रम्हज्ञानी को भ्रम नही रहता । उसे सभी ओर ब्रम्ह ही ब्रम्ह दिखता उसे माया दिखती ही नही । इसप्रकार ब्रम्ह तथा माया ऐसे दो अलग न दिखने के कारण मायाके सुखकी चाहना ही खतम् हुई रहती । ऐसी चाहना ही खतम् होनेके कारण किसी प्रकारके मायाके दु:खकी चिंता नही रहती । माया यह झूठ है यह समज जानेके कारण मायाके विषयरस भी झूठ दिखते । इसलिये ऐसे ब्रम्हज्ञानीकी विषयरसकी चाहना भी खतम् हुई रहती । ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१२३।।

ग्यान संग गुर पावियाँ ।। लिव संग निंरजन राम ।।
साच संग सुखराम के ।। सऱ्या सकळ बिध काम ।।१२४।।

ऐसे गुरु जिनका भ्रम गया है,काल का डर गया है,विषय वासना गयी है इनके संगसे हर का ज्ञान प्राप्त होता । उस ज्ञान के बल से घट मे ही निरंजन राम याने सतस्वरुप रामजी से लिव लगती तथा हंस को हर प्राप्ती का अनुभव आ जाता । ऐसा होने पे दुविधा भाव याने माया क्या और ब्रम्ह क्या यह खतम् हो जाता । इसप्रकार उसे सिर्फ ब्रम्ह ही है ऐसा विश्वास आ जाता फिर परमात्मा जानने का कोई काम उसका बाकी नही रहता ।।।१२४।।

ग्यान ज्हाँ तो दूज हे ।। फेर जाप लग जाण ।।
अेक नही सुखराम के ।। पचे तहाँ लग आण ।।१२५।।

जो साधू ज्ञान मे ब्रम्ह की भक्ति करना चाहिये तथा साथ मे माया को भी जाप करने चाहिये ऐसे दो प्रकार के उपदेश देता वहाँ पे एक हर नही है ऐसा समजना । वहाँ हर और माया दो है ऐसा जानना । ऐसा साधू कितना भी पचा तो भी उसे एक हर मिलेगा नही तथा उसके शिष्य कितने भी पचे तो भी उन्हें एक हर क्या है यह समजेगा नही ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१२५।।

सुख दु:ख अेई भोगवे ।। सर्ग नर्क अेई जाय ।।
ब्रम्ह अेक सुखराम के ।। यू सुण दोय क्राय ।।१२६।।

स्वर्ग तथा नरक यहाँ जीव सुख और दु:ख भोगता उससे एक ब्रम्ह निराला है ऐसा बताता । इसप्रकार माया तथा ब्रम्ह की दो अलग-अलग भक्तियाँ करने लगता वो नर ब्रम्हज्ञानी नही है ऐसा जानो मतलब सुख भोजने के लिये माया के जाप करने लगाता तथा ब्रम्ह को

पाने के लिये ब्रम्हज्ञान मनसे समजने लगाता वह ब्रम्हज्ञानी नही है ।।।१२६।।

चौपाई ।।

सर्ग नर्क कहे नर कहाँ हे ।। सोझ बतावो मोई ।।
के सुखराम भूल हे सारी ।। ब्रम्ह बिना नही कोई ।।१२७।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजको स्वयम् कथीत ब्रम्हज्ञानी पुछ्ता कि, स्वर्ग,नरक कहाँ है वह बतावो । वह ब्रम्हसे अलग है की नही यह बतावो तब आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजने उस मनुष्यसे कहा स्वर्ग,नरक ब्रम्हसे अलग है यह तेरी भूल है । स्वर्ग नरक ये सभी ब्रम्हमें है ।।।१२७।।

कहोजी नर्क देख कुण आयो ।। सुर्ग गम किण आणी ।।
के सुखराम मोख कुण दिठी ।। सो मुज कहो बखाणी ।।१२८।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजसे स्वयम् कथित ब्रम्हज्ञानी मनुष्य पूछ्ता है कि,स्वर्ग तथा नरक कौन देखके आये?उसपर आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजने उसे पूछा कि,मोक्ष कौन देखके आया यह मुझे बतावो ।।।१२८।।

वां सुण नर्क दु:ख सो कहीये ।। फेर गर्भ गत जाणो ।।
के सुखराम सुरग या सुख हे ।। पदवी मोख बखाणे ।।१२९।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज स्वयम् कथीत ब्रम्हज्ञानीको कहते है,स्वर्ग और नरक इस मृत्युलोकमें कैसे है यह समजा गर्भमे रहना यह नरकका दु:ख है और जगतमे मायाके सुख लेना यह स्वर्ग के सुख है । भ्रम मिट जाना,ब्रम्हा,विष्णू,महेशसे मिलनेवाले मायाके सुखोकी चाहना मिट जाना,विषयरस मिट जाना और हरमे मस्त रहना यह मृत्युलोकमे हंस को मोक्ष पदवी प्राप्त हुई ऐसे समज ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है ।।।१२९।।

तीन जुगा मे प्रगट जातां ।। भूप सुर्ग नित भाया ।।
के सुखराम नर्क गत सेदेहे ।। नास्केत ले आया ।।१३०।।

अभी कलियुग चल रहा है । इसके पहले सतयुग,त्रेतायुग तथा द्वापारयुगमें राजा लोग स्वर्गमे नित्य प्रगट जाते आते थे ।१८०० साल पहले विक्रमराजा स्वर्ग में जाते आते रहता था। इसीप्रकार नरक यह नासिकेतू ने सदेह जाकर देखा था। यह बात सारे जगतके ज्ञानी,ध्यानी जानते है ।।।१३०।।

प्रम मोख गम खंड पिंड मांही ।। साध संत गम जाणे ।।
के सुखराम तिथंकर पूगा ।। फेर ग्रभ नही आणे ।।१३१।।

जैसे स्वर्ग,नरकमें जाते आते थे वैसेही सतगुरु संतसे कैवल्य विज्ञानका भेद जानकर तिर्थंकर मोक्षमें गये है । उन्होंने परममोक्षका रास्ता पिंड्मे पाया था । पिंड्मे ही खंड ब्रम्हंड

बनाकर वे खंड ब्रम्हंड्के परे गये थे । ऐसी ३ लोकोमे सभी साधू संत तथा देवता तिर्थंकर मोक्ष पहुँचे यह साक्ष भरते है । उसके बाद वे कभी भी गर्भ में आये नही ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।१३१।।

सर्ग नर्क प्रगट जग माही ।। बिना ग्यान नही जाणे ।।
के सुखराम हाक दे अणभे ।। चोडे बरण बखाणे ।।१३२।।

अरे मनुष्य तू व्यर्थ स्वर्ग,नर्क पे बहस कर रहा है । तुझे ज्ञान नही इसलिये स्वर्ग तथा नरक जगत में प्रगट है यह समजता नही । मै तुझे अनुभव की बात सबको समजे ऐसे खोल खोल के वर्णन करके बोल रहा हूँ ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है ।।।१३२।।

बूझ्याँ गरज सरे नही भाया ।। सुण्या सांभळयाँ काँई ।।
के सुखराम कणकणी पकडयाँ ।। सबे बस व्हे आई ।।१३३।।

स्वर्ग है क्या,नरक है क्या,मन बसमे हो जाता क्या,पाँच इंद्रिये बस मे हो जाते क्या यह मुझे बारबार पूछने से तथा मेरे से सुनने से तेरा स्वर्ग है या नही,नरक है या नही यह भ्रम जायेगा नही । मै जो कहता हूँ उसका भेद तानकर पकड्नेसे तुझे भी मै कहता हुँ यह अनुभव हो जायेगा फिर सभी तेरे प्रश्न सहज छूट जायेंगे ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है ।।।१३३।।

साखी ।।

कोट जतन लख जाबता ।। पांच बस नही होय ।।
लिव लागाँ सुखराम के ।। सेझाँ सब बस जोय ।।१३४।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज मनुष्य को कहते है पाँचो को बस करने मे कोटी प्रकार के प्रयास किये तथा लक्ष्य प्रकार के जाप्ते किये तो भी पाँचो वासनिक इंद्रिये बस मे नही आते वे तो सतसाहेब से लिव लगते ही सहज मे बस हो जाते ।।।१३४।।

आठ पोहर चोसट घडी ।। लिव जे झोल न खाय ।।
तो सेझाँ सुखराम के ।। पांच तीन बंध जाय ।।१३५।।

जिस संत की आठ पोहर तथा चोसट घडी साहेब से लिव लगी रहती है उस लिवमे थोडी भी ढिल नही पड्ती ऐसे संतके पाँच–शब्द,स्पर्श,रुप,रस गंध की वासनामे तथा तीन गुण–रज, सत,तम की वासनाये सहज वश मे हो जाती है ।।।१३५।।

लिव बिन पकडे ग्यान सूं ।। पाच तीन कूं कोय ।।
वाँ नर के सुखराम के ।। पलक पोहोर बस होय ।।१३६।।

जो मनुष्य परमात्मा के लिव बिना शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध ऐसे ५ वासनाको ज्ञानसे पकड्ने की कोशिश करेगा तो उस नर से पलभर से लेकर जादा मे जादा पोहोर याने ३घंटे तक वश कर पायेगा । जादा समय के लिये या सदा के लिये ज्ञान से वश नही कर

पायेगा ।।।१३६।।

लिव सूं आपै बंध ग्या ।। पाच तीन मिल अेक ।।
वे जिरे हुवा सुखराम के ।। आठ पोर मध देख ।।१३७।।

परंतु जिस साधूकी साहेबसे लिव लगी है उनकी पाँचो विषय वासनाये,तीन गुण की वासनाये तथा मन यह सभी सदाके लिये पक्के वश हो जाते है । यह कैसे परमात्मा याने सतशब्द । सतशब्द माया मे रामनाम मे रहता है । यह रामनाम सतगुरु के द्वारा आते साँस तथा जाते साँसमे रटनेसे परमात्मा का सतशब्द हंसमे प्रगट होता है । आगे धारोधार स्मरन करने से ६ पूरब के तथा ६पश्चिम के कमल छेदन होते है । जब चौथा कमल मतलब नाभी कमल जहाँ विष्णू–लक्ष्मी बिराजमान है यह कमल छेदन होता है तब हंस के पाँचो आत्माये शब्द,स्पर्श, रुप,रस,गंध हंससे अलग हो जाते है । इसकारण हंस पाँचो आत्मावो के वासना से मुक्त हो जाता है । जैसे हंस नौवे स्थान पे जाता है मतलब त्रिगुटी मे जाता है वहाँ हंस का मन हंस से अलग होता है । इसप्रकार हंस मन से भी मुक्त हो जाता है । हंस मे ने:अंछर प्रगट होते ही इच्छा याने त्रिगुणी माया ढिली हो जाती है । जब हंस दसवेद्वार पहुँचता है तब त्रिगुणी माया पूर्ण खतम हो जाती है । इसप्रकार परमात्मा से लिव बंध साधू की स्थिती बनती है । यह मेरा अनुभव है वह मै तुझे बजा बजा के,ताण–ताणकर बता रहा हूँ । दुजे कोटी उपाय किये तो भी मन पाँच विषय वासना तथा तीन गुण वासना यह वश नही होती है ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है ।।।१३७।।

।। इति ब्रम्ह ग्यानी को अंग संपूरण ।।